पी. एण्ड एस. बैंक

राजभाषा अंकुर

जून 2021

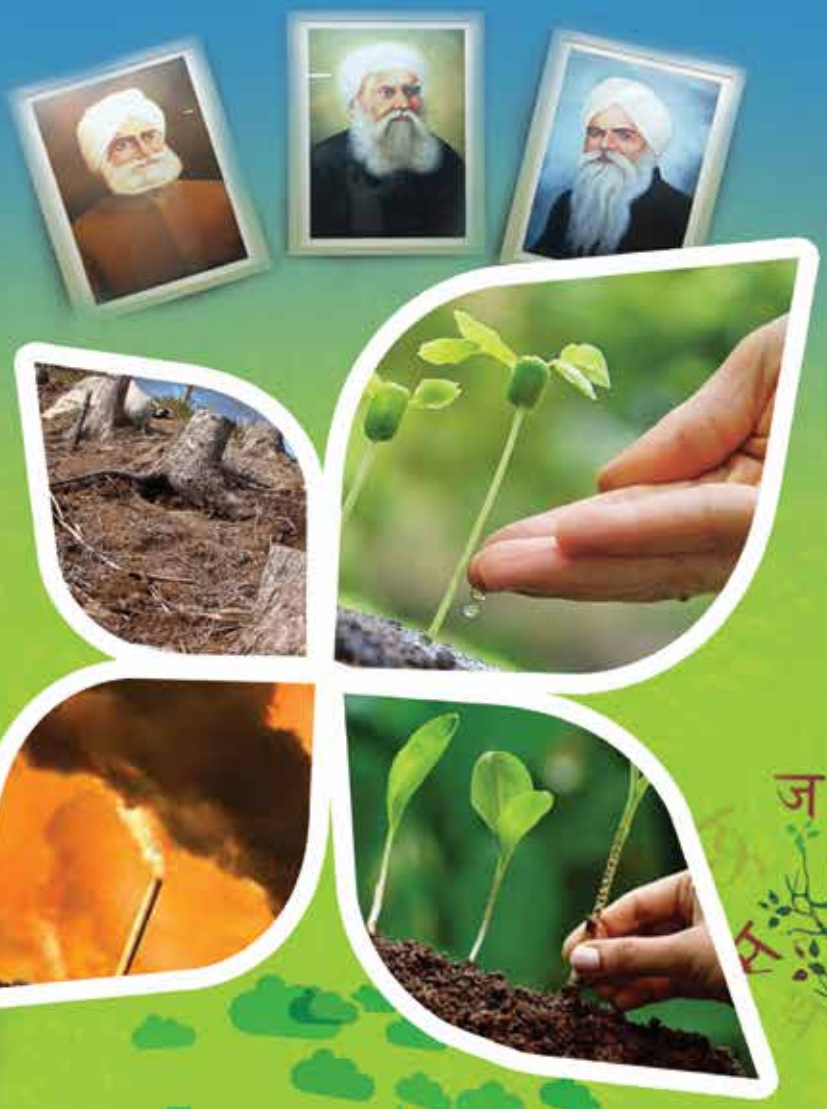

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ॥
पंजाब एण्ड सिंध बैंक
Punjab & Sind Bank
ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ
(भारत सरकार का उपक्रम / A Govt. of India Undertaking)
राजभाषा विभाग

अ0शा0 पत्र सं0 11012/3/2021-समिति-3

सत्यमेव जयते

चिराग पासवान
संसद सदस्य (लोक सभा)

संयोजक
CONVENOR
तीसरी उपसमिति
Third SUB-COMMITTEE
संसदीय राजभाषा समिति
COMMITTEE OF PARLIAMENT ON
OFFICIAL LANGUAGE
11, तीन मूर्ति मार्ग,
11, TEEN MURTI MARG,
नई दिल्ली / New Delhi-110011

दिनांक: 08 अप्रैल, 2021

प्रिय श्री चमन लाल जी,

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति ने दिनांक 08 अप्रैल, 2021 को आपके कार्यालय के कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में हुई प्रगति की जांच की और इस संबंध में आपसे तथा आपके सहयोगियों से विस्तार से चर्चा हुई। समिति का विश्वास है कि आप राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के सभी शेष लक्ष्यों को शीघ्र पूरा करेंगे तथा कार्यालय की आगामी राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में इसका मूल्यांकन कर समिति सचिवालय को अविलम्ब सूचित करेंगे।

2. इस निरीक्षण कार्यक्रम के सिलसिले में आपने हर प्रकार की व्यवस्था करके अपना सहयोग प्रदान किया एवं निरीक्षण के दौरान समिति सचिवालय के साथ बराबर सम्पर्क बनाए रखा जिससे समिति को अपना कार्यक्रम सम्पन्न करने में बड़ी सुविधा हुई। इसके लिए मैं आपको विशेष रूप से धन्यवाद देता हू।

3. निरीक्षण के दौरान आपके सहयोग के लिए धन्यवाद।

आपका,

(चिराग पासवान)

श्री चमन लाल,
आंचलिक प्रबंधक,
पंजाब एण्ड सिंध बैंक,
अंचल कार्यालय दिल्ली-1,
आश्रम चौक, सिद्धार्थ एन्कलेव,
नई दिल्ली-110014

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

बैंक हाउस, प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली - 110008

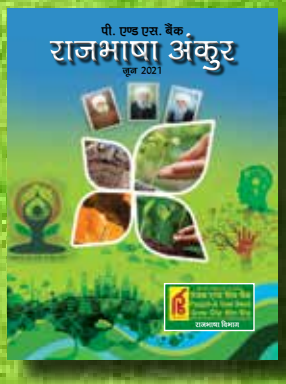

जून 2021

मुख्य संरक्षक

श्री एस. कृष्णन

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

संरक्षक

श्री कोल्लेगाल वी राघवेन्द्र

कार्यकारी निदेशक

मुख्य संपादक

श्री कामेश सेठी

महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक एवं प्रकाशक

श्री निखिल शर्मा

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

श्री देवेन्द्र कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

श्रीमती मोनिका गुप्ता, प्रबंधक (राजभाषा)

श्री मोहन लाल, राजभाषा अधिकारी

ई-मेल : hindipatrika@psb.co.in

पंजीकरण सं.: एफ.2(25) प्रैस. 91

(पत्रिका प्रकाशन तिथि : 30/07/2021)

'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

मुद्रक : जैना ऑफसेट प्रिंटर्स

ए 33/2, साइट–4, साहिबाबाद इंडस्ट्रीयल एरिया,

गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश

फोन नं. : 98112 69844

ई-मेल: jainaoffsetprinters@gmail.com

विषय सूची

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल/विषय-सूची	1
2.	आपकी कलम से	2
3.	संपादकीय	3
4.	सहज सरल अनुवाद की बारीकियाँ	4-9
5.	एक पार्क ऐसा भी	10-12
6.	पंजाब एण्ड सिंध बैंक -अहर्निशं सेवामहे	13-15
7.	नॉर्दन लाइटज	15
8.	ग्राहक के मुख से	16
9.	हिंदी कार्यशाला	17
10	कड़वा सच	18-19
11.	कोविड विशेष ऋण योजना	20-21
12.	संसदीय राजभाषा समिति का निरीक्षण कार्यक्रम	22-23
13.	विश्व पर्यावरण दिवस	24-26
14.	कार्टून कोना	26
15.	अपनी हिंदी	27-28
16.	जरा सोचिए	28
17.	प्रतिज्ञा	29-30
18.	स्थापना दिवस 2021	31
19.	काव्य-मंजूषा	32-33
20.	गुस्सा नियंत्रण चाबी	34-36
21.	क्षेत्रीय भाषा -- मूल लेख व हिंदी रूपांतरण	37-41
22.	प्यारा साडा बैंक - पौधा सदाबहार	42-43
23.	राजभाषा गतिविधियाँ	44

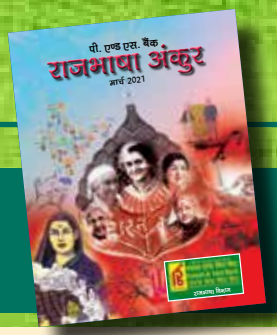

आपकी कलम से

पंजाब एण्ड सिंध बैंक की तिमाही हिंदी पत्रिका " राजभाषा अंकुर" का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ, जिसके लिए आपका धन्यवाद। मार्च–2021 का अंक बहुत ही आकर्षक एवं प्रेरणादायक है। पत्रिका का कवर पृष्ठ ही अपनी महिमा को बयान करता है। पत्रिका में लेख "भारत रत्न और महिलाएं" अत्यंत ज्ञानवर्धक है और यह हमारे लिए बहुत ही गौरव की बात है कि हम ऐसे देश के वासी हैं जहाँ महिलाएं भी पुरुषों के समान हर कार्यक्षेत्र में अग्रणी हैं और भारत रत्न की दावेदार भी हैं। पत्रिका में "ग्राहक के मुख से" का भी महत्वपूर्ण योगदान है। इसी तरह कार्टून कोना भी प्रशंसा का पात्र है। थोड़े एवं सरल शब्दों में कहा जाए तो राजभाषा विभाग ने गागर में सागर को भरा है। पत्रिका के सभी लेख, कहानियां, कविताएं प्रशंसनीय हैं और सरल, सटीक और सहज भाषा का प्रयोग किया गया है।

पत्रिका के कुशल संपादन हेतु संपादक मंडल को शुभकामनाएं। मैं आशा करता हूँ कि राजभाषा अंकुर आगामी वर्षों में भी इसी तरह नई ऊंचाइयों को छूती रहेगी। आगामी अंक की प्रतीक्षा में.....

प्रवीण कुमार मोंगिया
क्षेत्रीय महाप्रबंधक, चंडीगढ़

''राजभाषा अंकुर'' पत्रिका मार्च–2021 का अंक प्राप्त हुआ। हार्दिक आभार। वर्तमान अंक राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में तो अग्रणी है ही, साथ ही बैंकिंग व बैंक के आंतरिक कार्य–कलापों तथा जनसाधारण की रूचि के अनुरूप विविध लेखों का महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

पत्रिका का मुख्य पृष्ठ आकर्षक है। आंतरिक साज–सज्जा व पृष्ठों का कलेवर मनमोहक है। इस अंक से आपकी दूरगामी दृष्टि व संपादक मंडल की मेहनत साफ दृष्टिगोचर होती है। लेख 'डिजीटल बैंकिंग के लाभ तथा हानियाँ' काफी ज्ञानवर्धक है। 'बैंकिंग आज और कल' में नवीन जानकारी दी गई है। कुल मिलाकर यह पत्रिका जन साधारण व राजभाषा से जुड़े कार्मिकों का उत्साहवर्धन करेगा। आपको इस पुनीत कार्य के लिए साधुवाद तथा संपादक मंडल को शुभकामनाएं।

डॉ. चरनजीत सिंह
सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

हमें राजभाषा अंकुर मार्च 2021 का अंक प्राप्त हुआ, इसके लिए आपको धन्यवाद! इस पत्रिका में जो भी सामग्री प्रकाशित की गई हैं, जिसमें वर्तमान बैंकिंग परिवेश में डिजिटल बैंकिंग, सामाजिक विषयों जैसे – किसान की व्यथा, सामान्य ज्ञान संबंधी भारत रत्न महिलाएं व राजभाषा हिंदी संबंधी जानकारी बहुत ही लाभदायक/ज्ञानवर्धक है। यह पत्रिका हमें बैंकिंग व राजभाषा संबंधी गतिविधियों से अवगत कराती है और साथ ही हम सब अपने स्टाफ सदस्यों के विचारों से भी परिचित होते हैं। राजभाषा अंकुर अब पंजाब एण्ड सिंध बैंक की नई पहचान बन चुकी है। पत्रिका में कार्टून कोना और जरा सोंचिए में व्यक्तिगत किस्से के लिए भी जगह देकर पत्रिका को और रुचिकर बना दिया गया है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन संबंधी विषय की जानकारी बहुत ही लाभकारी व सराहनीय हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिका में प्रधान कार्यालय व अंचल कार्यालयों में हिंदी कार्यशाला संबंधी बैंक की गतिविधियों के समस्त छायाचित्रों का समावेश अत्यंत सराहनीय है। मैं, इस पत्रिका को बैंकिंग जगत के सम्मुख रखने पर पत्रिका के लेखक/संपादक मण्डल/प्रकाशक सभी को हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ।

विजय कुमार निरंजन
आंचलिक प्रबंधक, बरेली

संपादकीय

सुधी पाठकगण,

सर्वप्रथम आप सभी को बैंक के 114 वें स्थापना दिवस की बधाई! पत्रिका के माध्यम से जुड़ने का यह मेरा पहला अवसर है हालांकि पूर्व में भी मैं पत्रिका से जुड़ा रहा हूँ लेकिन इस बार प्रत्यक्ष तौर पर जुड़ाव अपेक्षाकृत अधिक आनंददायक है। बैंक, राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति हमेशा से अपने दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करता रहा है तथा बैंक को विभिन्न मंत्रालयों से प्रशंसा–पत्र प्राप्त होते रहे हैं। हाल ही में संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप–समिति ने बैंक के अंचल कार्यालय दिल्ली–1 का राजभाषाई निरीक्षण किया जिसमें समिति ने बैंक के कार्यों की प्रशंसा की। इस निरीक्षण की विशेष बात यह रही कि बैंक को निरीक्षण कार्यक्रम में संयोजन का दायित्व भी सौंपा गया था।

114 वें स्थापना दिवस के अवसर पर बैंक की सभी शाखाओं तथा कार्यालयों में हर्षोल्लास के साथ विविध गतिविधियों का आयोजन किया गया, बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने कार्मिकों को संबोधित किया तथा उनसे प्रतिक्रियाएं ली। स्थापना दिवस की गतिविधियाँ तथा इससे संबंधित लेख पत्रिका में विशेष है। काव्य–मंजूषा में विभिन्न विषयों पर रचित कविताएं समाहित है। 'कार्टून कोना' और 'जरा सोचिए' पत्रिका में यथावत अपना स्थान बनाए हुए हैं। हिंदी के साथ–साथ क्षेत्रीय भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए भी बैंक सदा से प्रयत्नशील रहा है इसलिए पंजाबी भाषा के लेख को उसके हिंदी रूपांतरण सहित प्रकाशित किया गया है।

हमारा प्रयास है कि पत्रिका को नित नए स्वरूप तथा विविधताओं के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत किया जाए। आशा है पत्रिका का यह अंक आपको रुचिकर लगेगा। पत्रिका के विषय में अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत कराएं।

आपके पत्रों की प्रतीक्षा में.....

(कामेश सेठी)
महाप्रबंधक सह
मुख्य राजभाषा अधिकारी

राजेश श्रीवास्तव

सहज एवं सरल अनुवाद की बारीकियाँ

अनुवाद करना एक बहुत बड़ी कला है। हर कोई एक अच्छा अनुवादक नहीं हो सकता क्योंकि शब्द के बदले शब्द बैठाने मात्र से अनुवाद नहीं हो जाता। अनुवाद बहते हुए पानी–सा होना चाहिए जिसके प्रवाह में कोई अवरोध न हो और जिसे पढ़ने में अनुवाद, अनुवाद न होकर मूल पाठ–सा ही लगे। अनुवाद को पढ़कर अगर समझने के लिए मूल भाषा का सहारा लेना पड़े तो ऐसे अनुवाद का कोई अर्थ नहीं होता। अनुवाद सहज, सरल और बोधगम्य होना चाहिए–टेढ़ा–मेढ़ा, उलझा हुआ, जटिल और तोड़ मरोड़ कर बनाया हुआ नहीं। एक कार्यक्रम के दौरान अनुवाद के बारे मे एक विद्वान वक्ता ने बड़ी सटीक टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि अनुवाद परकाया प्रवेश जैसा होता है यानि दूसरे के शरीर में प्रवेश करना जैसा कि अध्यात्म की दुनिया में होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस तरह परकाया प्रवेश में आपको किसी अन्य शरीर में प्रवेश करना होता है और अपने शरीर को छोड़ना होता है, उसी तरह अनुवाद में आपको दूसरे शरीर अर्थात स्रोत भाषा के भीतर जाना होता है ताकि आप उसके मूल अर्थ और भाव को समझ सकें। परंतु इस परकाया प्रवेश में आपको अपने शरीर यानि अपनी भाषा से भी जुड़े रहना है और उसकी मौलिकता और संस्कार भी बनाए रखने होते हैं। कहने का तात्पर्य है कि लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा की मौलिकता और उसकी विशेषताओं को भी समाहित करना होगा। पिछले 33 वर्षों के दौरान सात–आठ मंत्रालयों में काम करने का अवसर मिला जिसमें स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय जैसे बड़े मंत्रालय भी शामिल हैं। इस दौरान किए गए असीमित अनुवाद कार्य ने अनोखा ही अनुभव प्रदान किया। अनुवादों के सिद्धांत नहीं बल्कि निरंतर व्यावहारिक प्रयोग आपको एक अच्छा अनुवादक बनाता है। उसी व्यावहारिक अनुभव के आधार पर मेरा मानना है कि अंग्रेजी से हिंदी का अनुवाद करते समय निम्नलिखित बातों का विशेष रूप से ध्यान रखा जाना चाहिए:

(क) पृष्ठभूमि का रखें ध्यान

कभी–कभी अनुवाद इस प्रकार का होता है कि यदि आपको उसकी पृष्ठभूमि का पता नहीं है तो आप शब्दकोश देखने के बाद भी उसका अर्थ ग्रहण नहीं कर सकते। तमाम विषयों में इस तरह के बहुत से तकनीकी और पारिभाषिक शब्द होते हैं। मैं स्वास्थ्य विज्ञान से संबंधित कुछ वाक्यांशों का विशेष रूप से उदाहरण देना चाहूँगा। जब नैदानिक परीक्षण यानि Clinical Trials किए जाते हैं तो कुछ विशेष वाक्यांशों या शब्दावली का इस्तेमाल किया जाता है। उनमें से एक है– Double blind study– अब आप इसे दोहरा अंधा अध्ययन नहीं कह सकते। यहाँ जब तक आपको नैदानिक परीक्षणों के बारे में जानकारी नहीं होगी तब तक आप सही अनुवाद नहीं कर सकते। यदि आपको जानकारी है तो आप लिखेंगे– दोनों पक्षों को अज्ञात अध्ययन। इसका अर्थ यह है कि जब किसी नैदानिक परीक्षण के डॉक्टर और रोगी– दोनों को ही पता नहीं होता कि किस

अपनी पीड़ा सह लेना और दूसरे जीवों को पीड़ा न पहुंचाना, यही तपस्या का स्वरूप है - संत तिरूवल्लुवर

रोगी को कौन सी दवा दी जानी है तो इस वाक्यांश का इस्तेमाल किया जाता है। यदि केवल डॉक्टर को पता हो और रोगी को पता न हो तो उसे Single blind study अर्थात एक पक्ष को अज्ञात अध्ययन कहा जाता है।

इसी प्रकार एक और वाक्यांश है– Wash out period जिसका शाब्दिक अनुवाद नहीं किया जा सकता। कई बार चिकित्सक नई दवा शुरु करने से पहले शरीर में पिछली दवा के असर को समाप्त करने के लिए कुछ प्रक्रियाएं कराता है या दवाएं देता है। उसके कुछ समय पश्चात अगली दवा दी जाती है। इस पिछली दवा का असर समाप्त होने की इस बीच की अवधि को ही वाश आउट अवधि कहा जाता है। एक और वाक्यांश है जिसकी पूरी जानकारी न होने के कारण अनुवादक प्रायः उसका गलत अनुवाद करते हैं और वह है– Over the counter medicines- मैंने स्वास्थ्य मंत्रालय में अपने लंबे कार्यकाल के दौरान बहुत से अनुवादकों को इसका अर्थ– "काउंटर पर मिलने वाली दवाएं" लिखते देखा है जो कि एकदम अशुद्ध है और जानकारी का अभाव है। दरअसल ये वे दवाएं हैं जो बिना डॉक्टरी नुस्खे के लोग खरीदते हैं। ऐसी स्थिति में बेहतर यह होता है कि यदि आपको सही अनुवाद या पृष्ठभूमि का पता नहीं है तो आप अनुवाद करने के बजाय उसका ट्रांसलिटरेशन यानि लिप्यंतरण करें। आप ओवर द काउंटर दवाएं लिख दें–इससे कम–से–कम अनुवाद तो गलत नहीं होगा। इसी तरह नैदानिक परीक्षणों में Subject का अर्थ विषय से न होकर परीक्षणाधीन या प्रयोगाधीन व्यक्ति से होता है अर्थात वह व्यक्ति या रोगी जिस पर किसी नई दवा या थैरेपी का परीक्षण किया जा रहा है। यदि Subjects should be notified लिखा है तो इसका अर्थ है कि प्रयोगाधीन या परीक्षणाधीन व्यक्तियों को सूचित किया जाए (न कि यह–विषयों को अधिसूचित किया जाए)।

(ख) अलंकारिक भाषा का लक्ष्यार्थ समझें

अंग्रेजी की एक विशेषता यह भी है कि उसमें बहुत बार अलंकारिक भाषा का प्रयोग किया जाता है। लेकिन आप उस अलंकारिक भाषा का वास्तविक अर्थ नहीं समझते हैं तो अनुवाद के समय या तो मुसीबत खड़ी हो जाती है या फिर अर्थ का अनर्थ हो जाता है। नीचे एक बहुत सामान्य–सा वाक्य दिया गया है लेकिन भाषा कुछ हद तक अलंकारिक है–

The advice of the committee fell on deaf years.

अब इसका अर्थ यह तो नहीं हो सकता–समिति की सलाह बहरे कानों तक गई।

सही अनुवाद यह होगा– समिति की सलाह अनसुनी कर दी गई या समिति की सलाह पर ध्यान नहीं दिया गया। ऐसे मामलों में शाब्दिक अनुवाद से काम नहीं चलता, उसके लक्ष्यार्थ या व्यंग्यार्थ को समझना बहुत आवश्यक हो जाता है।

(ग) अमान्य और अप्रचलित शब्दावली से बचें

जब शब्दों को नया–नया सृजित किया जा रहा था और अंग्रेजी के तमाम शब्दों को हिंदी में ढालने की कोशिश की जा रही थी, तब कई शब्दकोशों में कुछ ऐसे शब्द भी गढ़ लिए गए जो न तो लोकप्रिय हो सके और न ही मान्य। हाँ, वे आज हिंदी सम्मेलनों और कार्यशालाओं में बताए जाने वाले हास्यास्पद उदाहरण जरुर बन गए हैं। उदाहरण के लिए–

Platform	– धुकधुकमंडल
Train	– लौहपथगामिनी
Cigarette	– धूम्रदंडिका
Head Cashier	– पोद्दार रोकड़िया
Admiral	– पोतपाल
Vice Admiral	– प्रपोतपाल
Ground Rent	– भू–भाटक
Mobile	– कानाफूसी यंत्र/वार्तालाप यंत्र
Silent	– सुषुप्तावस्था
Vibrant	– झनझनावस्था
Switch	– विद्युत आवागमनं नियंत्रणं यंत्रम्

ऐसे अनुवाद न तो उपयोगी साबित हुए और न ही लोकप्रिय हो सके। ऐसे अनुवादों से बचने की जरूरत है।

(घ) अपनी तरफ से भी घटाने और जोड़ने पड़ते हैं शब्द

हर भाषा का अपना व्याकरण और अपना सौंदर्य होता है। जब हम किसी लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते हैं तो हमें स्रोत भाषा के भाव को बिगाड़े बिना लक्ष्य भाषा के सौंदर्य और उसके व्याकरण को भी ध्यान में रखना होता है। यही कारण है कि कभी–कभी हमें स्रोत भाषा के किसी शब्द विशेष पर ध्यान दिए बिना अर्थात उसका अनुवाद किए बिना ही सही अनुवाद मिल जाता है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी में हम अक्सर कहते हैं– Please come- Please sit down- Please have cup of tea- लेकिन जब हम इनका अनुवाद हिंदी में करते हैं तो हमें Please

शब्द के अनुवाद की आवश्यकता ही नहीं है क्योंकि हिंदी का वाक्य विन्यास अपनी तरह का अलग सौंदर्य लिए हुए है और हमारे भाषा–संस्कार में कृपया शब्द का अनुवाद किए बिना भी बड़ा सटीक अनुवाद हो सकता है जैसे कि आइए, बैठिए, चाय ग्रहण कीजिए। ये हिंदी का वाक्य सौंदर्य है जहाँ अंग्रेजी के एक शब्द को घटाने पर भी वाक्य का सौंदर्य और विन्यास नहीं बिगड़ता।

दूसरी तरफ अंग्रेजी के कई शब्द ऐसे हैं जिनमें कुछ–न–कुछ अवश्य जोड़ना पड़ता है वरना हिंदी में उनका सही अर्थ निकालना बहुत मुश्किल है और अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है। उदाहरण के लिए –Tobacco Day के लिए तंबाकू दिवस बिल्कुल भी सही अनुवाद नहीं है। इसे लिखने से यह पता ही नहीं चलता कि यह तंबाकू खाने का दिन है या तंबाकू छोड़ने का। केवल अनुमान या पिछले अनुभव से ही काम चलाया जा सकता है। इसका सही अनुवाद करने के लिए कोई न कोई शब्द अपनी ओर से जोड़ना पड़ेगा जैसे कि तंबाकू निषेध दिवस/तंबाकू रोकथाम दिवस या तंबाकू निवारण दिवस। इसी तरह Life Jacket (ये जैकेट विमान में उपलब्ध होते हैं) को हम जीवन जैकेट नहीं लिख सकते क्योंकि शाब्दिक अनुवाद से कोई अर्थ ही नहीं निकलेगा। इसके लिए अपनी तरफ से कुछ जोड़ते हुए हमें जीवन रक्षक जैकेट लिखना होगा। Aids Day का अनुवाद एड्स दिवस भी एकदम गलत है, एड्स रोकथाम दिवस है सही अनुवाद। इसी प्रकार, Green Delhi का अर्थ हरित या हरी दिल्ली नहीं बल्कि हरी–भरी दिल्ली होगा।

(ड़) विशेष प्रकार की शब्दावली से रहें परिचित

कभी–कभी हमारा सामना विशेष प्रकार की शब्दावली से होता है। ऐसे विशेष शब्दों के अर्थ भी विशेष होते हैं। हमें उनके वास्तविक भाव को समझना होता है वरना अर्थ निकाल पाना बेहद कठिन होता है। जैसे कि संसद से संबंधित शब्दावली बड़ी खास किस्म की है। इसके मायने भी बड़े खास होते हैं। यदि आपको इसकी भली भाँति जानकारी नहीं है तो आप सटीक अनुवाद नहीं कर सकते। इसका एक उदाहरण है– Well of House– का अर्थ सदन कूप नहीं बल्कि सदन के बीचोंबीच है। Treasury Benches–का अर्थ कोषागार या खजाने की बेंचें नहीं बल्कि अध्यक्ष की दाहिनीं ओर की बेंचों पर बैठे सत्ता पक्ष के सदस्य हैं। इसी प्रकार, अदालती शब्दावली में SLP or Special Leave Petition– का अर्थ विशेष अवकाश याचिका नहीं विशेष अनुमति याचिका होता है। इस और महत्वपूर्ण उदाहरण है– Passive Smoking or Second hand smoking– जिसका शाब्दिक अर्थ अक्सर निष्क्रिय धूमपान या दूसरे दर्जे का धूम्रपान कर दिया जाता है। यहाँ शायद अनुवाद करने वाले को भी पता नहीं होता कि वह जो अनुवाद कर रहा है, उसका आखिर अर्थ क्या है। अनुवाद की सबसे बड़ी कसौटी यह है कि पहले आप स्वयं निश्चिंत हो लें कि एक सामान्य पाठक के रूप में आपको अनुवाद समझ आ रहा है या नहीं। एक शास्त्रीय शब्द के लिए एक शास्त्रीय शब्द ही अनुवाद के रूप में फिट कर देना उचित नहीं है। उसका अर्थ भी निकलना चाहिए। यहाँ Passive Smoking or Second hand smoking का अर्थ अप्रत्यक्ष रूप से किया गया धूम्रपान है अर्थात आप स्वयं तो धूम्रपान नहीं करते हैं लेकिन दूसरे व्यक्तियों द्वारा किए गए धूम्रपान का धुँआ आपको अंजाने में ही निगलना पड़ता है जिससे आप अप्रत्यक्ष रूप से धूम्रपान कर रहे हैं और आपको नुकसान पहुँच रहा है। यही स्थिति Out of Pocket Expenses की भी है। इसका अर्थ जेब से बाहर का खर्च नहीं बल्कि अपनी जेब से किया जाने वाला खर्च है। इस तरह के अनुवादों में बहुत सतर्क रहने की आवश्यकता होती है।

(च) काव्यात्मक अनुवाद में रहें सावधान

बहुत बार आप देखेंगे कि अंग्रेजी में कुछ बड़े काव्यात्मक वाक्य लिखे होते हैं। जो देखने, पढ़ने में भी खूबसूरत होते हैं और उनके अंत में तुकांत भी होता है। मैंने कई मेट्रो स्टेशनों पर और कई मॉल्स के बाहर यह लिखा देखा है–

More eyeballs

More footfalls – अब देखने में तो यह बड़ी सुंदर और छोटी–सी कविता लग रही है लेकिन इसका अर्थ उतना सरल नहीं है। वास्तव में यह एक विज्ञापन है जिसका अर्थ है कि जितनी ज्यादा निगाहों में आएगा, उतने ही लोग आकर्षित होंगे। अर्थात कहने वाला कह रहा है कि हमारे यहाँ विज्ञापन दीजिए, यहाँ से आपका प्रचार बहुत बढ़ेगा क्योंकि यहाँ बहुत–से लोग आते हैं और जितनी निगाहों में आपका विज्ञापन आएगा, उतने ही लोग आपका सामान खरीदने के लिए आकर्षित होंगे। इतनी बड़ी बात–केवल दो छोटी–छोटी पंक्तियों में। ये भाषा का कमाल है। अब आपके पास दो विकल्प हैं– या तो वास्तविक अर्थ समझ कर सीधा–सादा अनुवाद कर दीजिए जैसा ऊपर दिया गया है या फिर यदि आप कवि हृदय हैं तो आप भी वास्तविक भाव के साथ काव्यात्मक अनुवाद कर सकते हैं।

(छ) संज्ञा और सर्वनाम का रखें ध्यान

भाषा के व्याकरण के अनुसार, पहले संज्ञा का प्रयोग किया जाएगा और फिर उसके स्थान पर सर्वनाम का इस्तेमाल किया जाता है लेकिन अंग्रेजी में कई बार प्रयोग का तरीका अलग होता है और हम प्रायः अनुवाद करते समय उसी तरीके को अपना लेते हैं। इससे हिंदी का अनुवाद गलत तो नहीं होता पर अच्छा भी नहीं होता और व्याकरण के नियमों का पालन भी नहीं होता। दो उदाहरण देखिए–

As a result of changes to his medications your child's asthma may get worse.

इसका अनुवाद अक्सर किया जाता है–उसकी दवा में परिवर्तन के परिणामस्वरूप, आपके बच्चे का दमा अधिक खराब हो सकता है। जबकि सही अनुवाद होगा–आपके बच्चे की दवा में परिवर्तन के परिणामस्वरूप, उसका दमा अधिक खराब हो सकता है।

Your child should always call the doctor right away if he has any side effects.

इसका अनुवाद ज्यादातर ऐसे किया जाता है– यदि उसे कोई दुष्प्रभाव होता है तो आपके बच्चे को तुरंत डाक्टर को कॉल करना चाहिए। अब यहाँ संज्ञा और सर्वनाम के क्रम की अशुद्धि हो गई है। इसके स्थान पर ऐसा अनुवाद भी किया जाता है– आपके बच्चे को डॉक्टर को तुरंत कॉल करना चाहिए यदि उसे कोई दुष्प्रभाव होता है। यह कामचलाऊ अनुवाद है जिसमें अनुवाद तो सही है लेकिन यह अंग्रेजी की परंपरा का निर्वाह है, हिंदी वाक्य परंपरा का नहीं। सही अनुवाद इस प्रकार का होना चाहिए–

यदि आपके बच्चे को कोई दुष्प्रभाव होता है तो उसे तुरंत डाक्टर को कॉल करना चाहिए।

(ज) भाषागत संस्कार पर दें ध्यान/शाब्दिक अनुवाद से बचें

अनुवाद करते समय भाषागत संस्कार बहुत काम करता है। कुछ चीजें किसी भाषा विशेष से जुड़ी होती हैं और उसी में अच्छी लगती हैं लेकिन अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा में या तो वह भाव आ नहीं पाता या फिर उसकी आवश्यकता नहीं होती। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी का एक वाक्यांश है–

For your kind information please.

यहाँ ापदक का हिंदी में कोई अर्थ नहीं है–आप सिर्फ यही लिखेंगे कि आपकी सूचना के लिए या आपकी जानकारी के लिए। लेकिन भाषागत सही ज्ञान न होने के कारण कई बार भयंकर या हास्यास्पद भूलें हो जाती हैं। मेरे पास ऐसा ही एक पत्र कार्यालय में आया जिसमें इसी वाक्य का अनुवाद इस प्रकार दिया गया है:

आपकी दयालु सूचना के लिए। मुझे नहीं पता कि यह अनुवादक की भूल थी या गूगल की लेकिन यहाँ मर्म का न समझते हुए केवल शाब्दिक अनुवाद किया गया है।

इसी प्रकार, हमारी अपनी भाषा में हम सम्मान प्रदर्शित करने के लिए ''जी'' शब्द का इस्तेमाल करते हैं जैसे कि शुक्ला जी, आबूसरिया जी लेकिन अंग्रेजी में इस 'जी' का कोई औचित्य ही नहीं है। वे तो Mr. Shukla or Mr. Abusaria ही कहेंगे। हमारी भाषा में सम्मान या सत्कार के तीन स्तर हैं– तू, तुम और आप लेकिन अंग्रेजी वाले सिर्फ you से ही काम चला लेते हैं। हाँ किसी समय thou, thine, thy जैसे तू के समानार्थी शब्द थे लेकिन अब तो एक की कैटेगरी रह गई है। ये हर भाषा का अपना संस्कार है। यहाँ आकर अनुवाद की सीमाएं सामने आ जाती हैं। अंग्रेजी में Father is standing वाक्य में पिता एकवचन है, इसलिए is का प्रयोग किया गया है लेकिन हमारी भाषा का संस्कार अलग है। हम यह नहीं लिख सकते– पिता खड़ा है, हमें लिखना पड़ेगा–पिताजी खड़े हैं (हालांकि वह एकवचन ही हैं)।

हमारी भाषा में पानी और जल करने में फर्क है। यमुना का पानी और गंगाजल कहते ही पता चल जाएगा कि अंतर कहाँ है। अंतर है पवित्रता का लेकिन अनुवाद में आप यह पवित्रता ला ही नहीं सकते। उसकी अपनी सीमाएं हैं। भारतीय संस्कृति में पूजा पाठ संबंधी समस्त सामग्री का संकेत उसकी शब्दावली से ही हो जाता है जैसे कि अक्षत, तांबूल, पुंगीफल, गंगाजल (चावल, पान, सुपारी, गंगा का पानी नहीं)।

(झ) अधिक कठिन अनुवाद भी किसी काम का नहीं

अनुवाद को इतना कठिन भी नहीं होना चाहिए कि किसी के पल्ले ही न पड़े। मसलन–

अमुक ठेकेदारों पर शास्ति अधिरोपित की जाए...

Penalty should be imposed on such contractors...

डीडीए के फॉर्म में मैंने लिखा देखा–**भू-भाटक**। आप अगर संस्कृत के ज्ञानी नहीं हैं तो आप समझ ही नहीं सकते कि यह ground rent के लिए लिखा गया है। आयकर विभाग के रिटर्न फार्म को हिंदी में देखिए, अंग्रेजी सामने न रखी हो तो भर ही नहीं सकते। ऐसी कठिन हिंदी भी किस काम की। यूँ दुनिया में न कुछ कठिन होता और न कुछ सरल, केवल परिचित और अपरिचित होता है। जिससे हम परिचित हैं, वह सरल है और जिससे अपरिचित हैं, वह कठिन है। फिर भी, उन शब्दों का ज्यादा प्रयोग करना चाहिए जिससे आम जनमानस ज्यादा परिचित हो।

(ञ) कभी-कभी सरल अनुवाद भी होता है कठिन

कभी–कभी मामला उल्टा भी होता है। कभी–कभी सरल अनुवाद शब्द या वाक्य को अनर्गल बना देता है। मसलन SHO को आप थाना प्रभारी कह दें तो शायद बिना पढ़ा लिखा व्यक्ति भी समझ जाएगा लेकिन यदि आप उसकी full form यानि Station House Officer का अनुवाद करने के चक्कर में उसे **स्टेशन घर का अधिकारी या स्टेशन हाउस अधिकारी** लिख गए तो शायद खुद SHO भी नहीं समझ पाएगा कि आप किसकी बात कर रहे हैं। हाँ, आम भाषा में दरोगा जी काम चला सकता है।

यही हाल **Soil Engineer** का है जिसका संस्कृतनिष्ठ अनुवाद **मृदा अभियंता** या **मृदा इंजीनियर** है लेकिन अगर आप इसे मिट्टी इंजीनियर कह देंगे तो उसकी मिट्टी ही हो जाएगी। ऐसे कुछ प्रसंगों में सरल अनुवाद मामले को बिगाड़ भी देता है। इसीलिए थोड़ा सावधान रहिए। कृपया ऐसी सरलता पर भी मत उतरिए कि प्रतिष्ठा का ही बेड़ागर्क हो जाए।

(ट) पराए शब्दों को अपनी भाषा में करें पूरी तरह आत्मसात

भाषा सतत विकासशील होती है। उसमें अनेक भाषाओं के शब्द समय–समय पर समाहित होते रहे हैं। भाषाओं का विकास ही इस तरह होता है कि हम अपना योगदान दूसरों को दें और

दूसरों के योगदानों को ग्रहण करें। उदाहरण देकर बात करूं तो कंप्यूटर से संबंधित सारी शब्दावली को हमने ज्यों का त्यों लिया है जैसे कि कंप्यूटर, माउस, हार्ड कॉपी, सॉफ्ट कॉपी, मॉनीटर, फ्लॉपी, पैन ड्राइव इत्यादि। हमने प्रोफेसर, स्कूल, स्टेशन, ट्रेन, प्लेटफार्म, टिकट, कर्फ्यू आदि जैसे शब्दों को भी ज्यों का त्यों अपनाया है। कोई आवश्यकता भी नहीं है कि हम इनका अनुवाद तलाशते फिरें। यदि मैं कहूं– ट्रेन लेट है तो सबको इसका अर्थ समझ आता है हालांकि इसमें हिंदी का सिर्फ एक शब्द है और वह है– "है"। ऐसे शब्दों को अपनी भाषा में पूरी तरह से आत्मसात किए जाने की आवश्यकता है। यदि हमने उन्हें अपनी भाषा में ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया है तो उन पर व्याकरण के नियम भी हमारे ही चलने चाहिए ताकि वे एकदम हमारे–से लगें। एक कार्यशाला के दौरान मैंने कहा–**"कंप्यूटरों ने हमारे काम को बहुत आसान कर दिया है।"** इस पर कुछ लोगों ने कड़ी आपत्ति करते हुए कहा कि आपको कंप्यूटर्स कहना चाहिए था–कंप्यूटरों नहीं। लेकिन मेरा दृढ़तापूर्वक मानना है कि जब किसी शब्द को हमने अपनी भाषा में ज्यों का त्यों ले लिया है तो उस पर व्याकरण के नियम भी हमारे ही चलेंगे। हमारी भाषा में बहुवचन बनाने के लिए "ओं" प्रत्यय का प्रयोग होता है जैसे कि लड़का–लड़कों, फूल–फूलों. भाई–भाइयों, बहिन–बहिनों तो इसी तर्ज पर कंप्यूटर का बहुवचन कंप्यूटरों होना बिल्कुल उचित है और इसमें अपनापन

है। हाँ, जब हम उसका प्रयोग अंग्रेजी में करेंगे तो कंप्यूटर्स ही कहेंगे। यदि कोई भारतीय फ्रांस के किसी बच्चे को गोद ले ले तो क्या उसका नाम फ्रेंच में ही रखेगा या भारतीय नामों के अनुसार?

(ठ) अनुवाद में जरूरी है तारतम्यता

ये जरूरी नहीं है कि आप बहुत उच्चकोटि का साहित्यिक अनुवाद ही करें। मुख्य बात यह है कि अनुवाद को एक तो मूल रचना की भावना के करीब होना चाहिए और साथ ही उसमें तारतम्यता (harmony) होनी चाहिए जिससे वह अनुवाद जैसा न दिखकर मूल पाठ जैसा ही दिखाई दे। सही तारतम्य में आप चार शब्द भी मिलाकर रख दें तो कविता हो जाती है। अमीर खुसरो का एक किस्सा आपसे साझा किए देता हूँ कि तारतम्यता क्या चीज है। कहते हैं कि एक बार प्रख्यात कवि अमीर खुसरो कहीं जा रहे थे। वे घोड़े पर सवार थे और रास्ता लम्बा। उन्हें रास्ते में प्यास लगी। पास का सारा पानी खत्म हो चुका था। उन्होंने इधर–उधर नजर दौड़ाई तो कुछ दूर एक गांव दिखाई दिया। उन्होंने घोड़े का रुख उस गांव की ओर ही कर दिया। गांव में घुसते ही उन्हें एक बड़ा सा कुआं नजर आया, जिस पर चार पनिहारिन पानी भर रही थीं। खुसरो ने उनसे पानी पिलाने का आग्रह किया। तभी अचानक उनमें से एक पनिहारिन ने उन्हें पहचान लिया और फुसफुसाकर अन्य स्त्रियों को भी खुसरो के बारे में बता दिया। तब तक खुसरो की रचनाएं आम जनों में खूब प्रचलित व लोकप्रिय हो चुकी थीं। वे स्त्रियां चुहल भरे अंदाज में बोलीं– ''ऐसे नहीं, पहले हम आपसे कविता सुनेंगे, तब पानी पिलाएंगे। खुसरो ने मुस्कराते हुए पूछा– कौन सी कविता सुनोगी, आखिर। बोलो तो?

एक बोली– मैं तो खीर पर कविता सुनूंगी।
दूसरी बोली–मैं चरखे पर सुनूंगी।
तीसरी कहने लगी– नही भई, मैं तो कुत्ते पर सुनना चाहूंगी।
चौथी बोली– और मैं ढोल पर कविता सुनूंगी।

विलक्षण प्रतिभा के धनी अमीर खुसरो मुस्कराए और बोले– चलो मैं तुम सभी की पसंद को एक ही कविता में सुनाए देता हूँ। तब अमीर खुसरो ने जो तुकबंदी सुनाई, वह किसी कविता से कम न थी–

'खीर पकाई जतन से, चरखा दिया चलाय,
आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजाय'

इसका कारण था उसकी तारतम्यता। कविता सुनकर चारों स्त्रियां खुश हो गईं और उन्होंने अमीर खुसरो को ताजा शीतल जल पिलाया। अमीर खुसरो ने पानी पीकर उन्हें धन्यवाद दिया और मुस्कराते हुए सफर पर आगे बढ़ गए। कहने का तात्पर्य यह है कि बात कहने में तारतम्यता हो तो साधारण–सी बात भी कविता जैसी लगती है। उसी प्रकार, अनुवाद में एक तारतम्य होना चाहिए ताकि उसे पढ़ने पर अनुवाद का–सा अहसास न हो, पराया शब्द भी आपकी अपनी व्याकरण के साँचे में ढला हो और आपको अपना–सा लगे, तब आपका अनुवाद करना सफल है।

(ड) अनुवाद संबंधी भयंकर भूलों से रहें सचेत

जल्दबाजी में या असावधानीवश कभी–कभी भयंकर भूलें भी हो जाती हैं। इन्हें अंग्रेजी में हाउलर (howler) कहा जाता है। वह अभी–अभी यहाँ से गुजरा है– He has just passed away. या फिर Conflict of Interest के लिए "ब्याज का संघर्ष" (सही अनुवाद–हित का टकराव)। ऐसे अनुवादों के प्रति बेहद सचेत रहना चाहिए।

(ढ) प्लेसमेंट संबंधी गलतियों से बचें

कभी–कभी शब्दों को प्लेसमेंट संबंधी गलतियों यानि शब्दों को सही क्रम में न रखने से बड़ी गड़बड़ हो जाती है। कई बार तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। एक छोटा–सा उदाहरण देखिए– You will be asked about your weekly alcohol use. अब यदि आपने weekly alcohol use के लिए **साप्ताहिक शराब** का प्रयोग कर दिया तो वाक्य चौपट हो जाएगा। मैंने इसका अनुवाद इस तरह देखा– आपसे आपके साप्ताहिक शराब के उपयोग के बारे में पूछा जाएगा। यह अनुवाद एकदम अशुद्ध है, सही अनुवाद इस प्रकार होगा– आपसे शराब के साप्ताहिक उपयोग के बारे में पूछा जाएगा।

कभी–कभी समाचारों में ऐसा वाक्य भी आता है– सताई गई, बेसहारा, बेघर औरतों के लिए पुनर्वास के लिए अमुक मंत्री द्वारा घोषणा। अब यदि आपने कर्ता को सबसे पहले रखने की जिद में अमुक मंत्री द्वारा को उठाकर सबसे पहले रख दिया तो देख लीजिए कि वाक्य का क्या हश्र हो जाएगा। इसलिए वाक्य में शब्दों और वाक्यांशों का प्लेसमेंट एकदम सही होना चाहिए।

उप–निदेशक (रा.भा.)
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय
भारत सरकार

राजिंदर सिंह बेवली

एक पार्क ऐसा भी

साथियो, लेख का शीर्षक देखकर आपको कुछ अलग सा अनुभव हो रहा होगा कि पार्क बहुत अधिक सुंदर होगा, रंग बिरंगे फूलों से भरा होगा, अच्छी–अच्छी क्यारियाँ होंगी, बहुत खूबसूरत फव्वारें होंगे और बहते पानी के ऊपर कहीं कहीं ऊपर की ओर उठे हुए लकड़ीनुमा छोटे छोटे पुल होंगे। नहीं क्या! जी ऐसा कुछ भी नहीं है इस पार्क में। बिलकुल साधारण किस्म का पार्क है। इतना जरूर है कि सकारात्मक सोच और अलग–अलग विशेषताओं वाले कुछ वरिष्ठ नागरिकों ने इस आम से ख़ास बना दिया है।

कुदरती तौर इस पार्क को जंगल भी कहा जाए तो गलत न होगा। यहाँ पहाड़ों पर लगाए जाने वाले विशेष किस्म के चीड़ के लगभग 50 वृक्ष (Pine Treè) और इतने ही सागवान (Teak Trees) के पेड़ लगे हैं जो इस पार्क को दूसरों से अलग कर देते हैं। इनके अतिरिक्त 50–60 सिल्वर ओक, बढ़, सातपत्ती, चकरसिया, पीपल, नीम, धरेक, बहेड़ा, चकरसिया आदि के बहुत से वृक्ष लगे हैं जो इस पार्क को थोड़ा–थोड़ा जंगल का रूप भी दे देते हैं। इसकी ढलाननुमा तस्वीर इसकी खूबसूरती को कई गुना बढ़ा देती है।

रिटायरमैंट के बाद जब मैं अपने घर मोहाली आया तो मेरी मुलाकात कुछ ऐसे वरिष्ठ नागरिकों से हुई जो बहुत सैर करते हैं और अपने आपको बुजुर्ग मानने को बिलकुल तैयार ही नहीं थे। जितना व्यायाम वे करते हैं उतना शायद आज के कई युवा भी नहीं कर पाएंगे। सब के सब कर्मठ, नई ऊर्जा से भरे हुए, कुछ न कुछ नया करने की ललक वाले। आइए मैं आपका परिचय समूह के समाजसेवियों से करवा दूँ। इनमें हैं सेना से रिटायर्ड अधिकारी कर्नल टी.बी.एस बेदी, शिक्षाविद् डॉ. हरीश पुरी, ब्रिगेडियर डॉक्टर ए.एस.क्वात्रा, पर्यावरणविद् श्री तिलकराज बाँका, चीफ सुप्रिंटैंडेट इंजीनियर श्री केजेएस बराड़, गैर परंपरागत ऊर्जा (चंडीगढ़) के प्रमुख श्री एस.एस.बेदी, एमटीएनएल के श्री बलबीर सिंह भाटिया, वयोवृद्ध श्री टी.सी.कटोच साहब और सूक्ष्म विश्लेषक श्री गुलशनबीर सिंह हैं। इन सदस्यों में 63 से लेकर 94 वर्ष तक के नागरिक शामिल हैं। इनमें से प्रत्येक की ख़ासियत एक दूसरे से अलग है किंतु सकारात्मकता में सभी एक–दूसरे से बढ़कर हैं। साफ–सफाई के हिसाब से यह पार्क एक सरकारी पार्क है बाकी आप खुद अंदाजा लगा सकते हैं। शुरू–शुरू में जब मैं इन्हें देखता कि आए दिन ये वरिष्ठ नागरिक पार्क की स्थिति सुधारने के लिए खुद ही कुछ न कुछ अच्छा करते रहते जिस कारण देखते ही देखते पार्क ने एक नए ही पार्क का रूप ले लिया। मैं इन सबमें से सबसे छोटा वरिष्ठ नगरिक हूँ अतः मैंने भी इनके कामों को अपने जीवन का एक अंग बना लिया। जब भी कोई नया सुझाव आता, मैं जरूर उसे अच्छे ढंग से आगे बढ़ाने के लिए अपने पूरे सहयोग का आश्वासन देता। तो आइए जानें आखिर इस पार्क की विशेषताएँ क्या हैं?

स्वच्छता अभियानः वरिष्ठ नागरिक डॉ. पुरी किसी के भी मोहताज नहीं हैं और आए दिन अपनी स्पैशल टीम और स्पैशल स्टिक्स लेकर साफ–सफाई को निकल पड़ते हैं और दूसरों द्वारा फैलाई गई गंदगी को उठाने का काम करते हैं। इस कचरे में केक, समौसों की चटनी, दारू की बोतलें और नशे का अन्य सामान आदि भी होते हैं। काश कूड़ा फैंकने वाले यह जान पाते कि कूड़ा उठाने के लिए कई गुना अधिक समय लग जाता है। लेकिन वरिष्ठ नागरिकों के जज़्बे को सलाम जिनकी सकारात्मकता के कारण यहाँ स्वच्छता अभियान सफल हो पा रहा है।

वृक्षारोपणः पर्यावरणविद् सदस्य श्री बाँका जी सदस्य द्वारा लगभग 8000 पेड़ लगाए जा चुके हैं जिनमें से कुछेक पार्क की भी शोभा बढ़ा रहे हैं। इनमें चंदन, पारिजात(हार–श्रृंगार), सहजन (मोरिंगा या ड्रम–स्टिक), चंपा, अर्जुन, कदंब, टेहू, गुलमोहर, बाकुल(अरेबियन बैरी), टेसू, चांदनी, इक्सोरा आदि प्रमुख हैं।

काश कूड़ा फैंकने वाले यह जान पाते कि कूड़ा उठाने के लिए कूड़ा फैंकने से कई गुना अधिक मेहनत करनी पडती है।

दवाओं की पेटीः पार्क में एक मैडिसीन बॉक्स लगाया गया है जिसमें लोग अपने घरों की अतिरिक्त दवाएं डाल जाते हैं। वहाँ से डॉक्टर साहब के माध्यम से दवाएं एक एनजीओ द्वारा गरीबों के लिए चलाई जा रही एक डिस्पैंसरी में जरूरतमंदों के काम आती हैं। निःसंदेह यह प्रयास बहुत ही सफल रहा।

24 घंटे निःशुल्क ओपन लाइब्रेरीः लोगों में पुस्तकें पढ़ने की रुचि बढ़े, इसके लिए इस पार्क में एक ओपन लाइब्रेरी बनी हुई है जहाँ पंजाबी, हिंदी और अंग्रेजी की अच्छी–अच्छी पुस्तकें रखी हुई हैं। यह पुस्तकालय दिन रात खुला रहता है और इसमें कोई ताला कभी नहीं लगाया जाता। कोई भी व्यक्ति पुस्तकों को पार्क में या घर ले जा कर पढ़ सकता है। जब मैं किसी व्यक्ति को लाइब्रेरी के बैंच पर आराम से बैठकर कुछ पढ़ता हुआ देखता हूँ तो वास्तव में बहुत खुशी होती है।

आपके मन में कुछ सवाल भी उठते होंगे कि पुस्तकें चोरी नहीं होतीं? बिलकुल सही सोचना है आपका। कई बार पुस्तकें उठा ली जाती हैं और लौटाई भी नहीं जातीं। ऐसे में वरिष्ठ नागरिकों का सोचना है कि उनके अपने कर्म और हमारे अपने..... खुशी की बात यह है पुस्तकालय फिर भी चलता जा रहा है और देने वाले देते जा रहे हैं।

पीने के साफ पानी की व्यवस्थाः शुरू–शुरू में पार्क में पानी की व्यवस्था नहीं थी जो अक्सर पार्कों में नहीं होती। वरिष्ठ नागरिकों की कोशिशों से पानी की लाइन डाली गई और पानी की शुरुआत हुई। बस फिर कर्नल टीबीएस बेदी व वरिष्ठ नागरिकों द्वारा एक फिल्टर और एक टंकी की व्यवस्था की गई जिससे अब वहाँ पीने का साफ–सुथरा फिल्टर्ड पानी 24 घंटे उपलब्ध रहता है। फिल्टर और टैंक की सफाई नियमित रूप से की जाती है।

कोविड महामारी के चलते विशेष इंतजाम

सेनीटाइजर की व्यवस्थाः जब सोच सकारात्मक हो तो क्या संभव नहीं होता। कोविड महामारी के चलते जून 2020 से पार्क में एक सैनीटाइजर स्टैंड की व्यवस्था की गई जिसमें रोज सुबह और शाम एक सैनीटाइजर की बोतल रखी जाती। वहाँ लिखा गया कि जिम में जाने से पहले हाथों को अच्छी तरह सैनीटाइज करें ताकि आप सुरक्षित रह सकें। शुरू–शुरू में सैनीटाइजर की कई बोतलें चोरी होती रहीं। लेकिन धीरे–धीरे जनता को पता चला और चोरी होनी

बंद हो गई। अब तो यदि कभी हम बोतल निकालना भूल जाएं तो कोई न कोई सैर करने वाला सैनीटाइजर हमारे घरों तक पहुँचा जाता। अच्छे काम कहीं न कहीं असर करते तो जरूर हैं।

ठंडे पानी के लिए घड़े की भी व्यवस्थाः सैनीटाइजर के साथ ही साफ–सुथरे पानी के लिए ठंडे पानी का घड़ा भी लगा दिया गया। जब आप कोई अच्छा काम करते हैं तो देर से ही सही, लोग भी आपके साथ हो जाते हैं। एक नेक महिला ने घड़े के ऊपर एक साफ–सुथरा सफेद कपड़ा बाँध दिया ताकि कोई घड़े में हाथ न मारे। कुछ ही दिन बाद किसी सज्जन ने मिट्टी का एक कटोरा नीचे रख दिया ताकि पानी नीचे उसमें गिरता जाए। एक सुबह यह देखकर मुझे बहुत खुशी हुई कि एक लंगड़ा कौआ उस कटोरे में से अपनी प्यास बुझा रहा था।

नेकी की अलमारीः अब नया काम यह किया गया है कि वहाँ एक नेकी की अलमारी रख दी गई है। जिसके पास अधिक है (कपड़े, जूते, बैग, बर्तन आदि) अलमारी में रख जाता है और जिसे उनकी जरूरत है, वहाँ से ले जाता है।

पेड़ों की दीमक का इलाजः हर काम की उम्मीद सरकारों से न रखी जाए तो अच्छा होता है। पेड़ों पर लगी दीमक को हटाने का हर संभव इलाज हम स्वयं ही कर लेते हैं। पेड़ों की जड़ों में दीमक की दवा डाली जाती है व आवश्यकतानुसार पत्तों पर छिड़काव भी करवाया जाता है ताकि पार्क की हरियाली कभी कम न हो।

जब आप कोई अच्छा काम करते हैं तो देर से ही सही, लोग भी आपके साथ हो जाते हैं। एक नेक महिला ने घड़े के ऊपर एक साफ सुथरा सफेद कपड़ा बाँध दिया ताकि कोई घड़े में हाथ न डाल सके। एक ही दिन बाद किसी सज्जन ने घड़े के नीचे मिट्टी का एक कटोरा रख दिया ताकि पानी कटोरे में गिरता रहे। एक सुबह यह देखकर बड़ी खुशी हुई कि एक लंगड़ा कौआ उस कटोरे में से अपनी प्यास बझा रहा था।

मरम्मत का कामः वरिष्ठ नागरिकों बहुत से काम बिना सरकार को शिकायत किए स्वयं ही कर दिए जाते हैं। एक उदाहरण देता हूँ आपको..... पार्क में रखे सिमेंट के बैंचों पर नीचे और पीछे तीन–तीन कंकरीट के फट्टे लगे होते हैं। अक्सर लोग इन बैंचों पर जोर आजमाइश भी करते हैं जिस कारण पहला फट्टा सबसे पहले टूटता है। वरिष्ठ नागरिकों की सकारात्मक सोच के कारण खुद ही पहले फट्टे को तीसरे फट्टे से बदल दिया जाता है और फिर नट कस दिए जाते हैं। इस प्रकार बैंचों की लहक भी दूर हो जाती है और उम्र भी बढ़ जाती है। इसी प्रकार जिम का रख रखाब उसके नटों को समय से कसते रहना व अन्य काम भी नागरिक स्वयं ही करते रहते हैं।

विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजनः कभी–कभी पार्क में गीले और सूखे कूड़े का निस्तारण (Waist segregation), रैपर्स का निस्तारण और नागरिकों की आम समस्याओं संबंधी सरकारी अधिकारियों से बातचीत आदि कार्यक्रम का भी आयोजन किया जाता है और सप्ताह

के अंत में हर रविवार सुबह पार्क में अच्छे जलपान की व्यवस्था होती है जो इन नागरिकों को युवा बनाए रखती है।

क्या आपके आसपास भी ऐसे पार्क हैं जो आपकी मदद चाहते हैं। कृपया उनकी गुहार सुनिएगा। खर्च बहुत अधिक नहीं होगा लेकिन आपका थोड़ा सा समय और साथ आपके पार्क को एक बेहतरीन पार्क बना देगा। हमें निश्चित रूप से बहुत खुशी होती है जब लोग बात करते हैं कि देखने में तो इससे अच्छे–अच्छे पार्क देखे हैं लेकिन जो यहाँ है, और किसी पार्क में नहीं। और यकीन मानिए वही खुशी का एक पल हमारे लिए सबसे बड़े सुकून का पल होता है। आइए अपने देश को हरा भरा और साफ–सुथरा बना दें।

सेवानिवृत सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

कामनाएँ समुद्र की भाँति अतृप्त हैं। पूर्ति का प्रयास करने पर उनका कोलाहल और बढ़ता है -स्वामी विवेकानंद

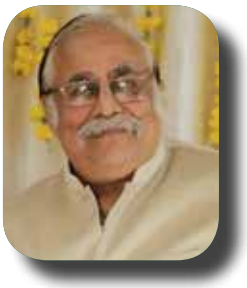

वी. एस. मिश्रा

पंजाब एण्ड सिंध बैंक – अहर्निशं सेवामहे

व्यक्ति हो या संस्था, एक सौ वर्ष की अवधि बहुत अर्थपूर्ण होती है और विशेष रूप से तब जबकि यह सौ वर्ष कई युगोत्तर घटनाओं से परिपूर्ण हो। हमारा बैंक भी इन घटनाओं का साक्षी रहा है और कहीं न कहीं प्रभावित भी हुआ है। मोटे तौर पर अपने बैंक के परिप्रेक्ष्य में इस दीर्घ अवधि को हम चार कालावधियों में विभाजित कर सकते हैं। प्रथम कालावधि 1947 के साथ अपने चरम पर समाप्त होती है। गुलाम भारत में बड़े–बड़े व्यापारियों और शक्तिशाली विदेशी कम्पनियों के सामने एक बैंक खोलना और उसकी प्रगति सुनिश्चित करना, बहुत बड़ी बात थी किंतु निस्पृह समाज सेवा के भाव से ओत–प्रोत एवं घोर आत्मविश्वास की धरोहर से धन्य भाई वीर सिंह ने जिस बरगद जैसे संस्थान की नींव रखी और उसमें सामान्य जन खासकर किसानों को जोडा, "पंजाब एण्ड सिंध" बैंक उसी बुलंदियों की जीवंत कथा है। विभाजन मे संपूर्ण राष्ट्र और खासकर पंजाब को बहुत हानि हुई। कल तक गले मिलकर सुख–दुख बाटने वाले एक–दूसरे के कट्टर शत्रु हो गए और अपना बैंक भी उसी झंझावत में बुरी तरह प्रभावित हुआ। देखा जाए तो बैंक का सिर और रीढ़ दोनों समाप्त हो गए लेकिन जिस उत्साह की दीपशिखा संतो के आशीर्वाद से सुसज्जित हो वह क्या बुझती? पुराने दोस्तों के जाने का दुःख तो था ही लेकिन फिर नए लोग आते गए काँरवा बसता गया। जल्द ही बैंक ने अपनी जीवन शक्ति से देश मे अपना मकाम बना लिया और फिर शुरू हुआ बैंक की उपलब्धियों का समय। डॉ. इन्द्रजीत सिंह के कुशल नेतृत्व मे नए शाखाओं का प्रसार, व्यवसाय में वृद्धि एवं अपनी दिन दुगनी–रात चौगुनी तरक्की से समस्त बैंकिग जगत को अभिभूत करता हुआ बैंक उस दहलीज पर आ पहुँचा जहाँ इसे सन् 1980 में सम्मानित राष्ट्रीयकृत बैंकों की सूची मे सम्मिलित करते हुए भारतमाता ने अपनी सेवा के लिए अंगीकार कर लिया। निश्चित तौर पर यह संक्रमण का काल था और जैसे होता रहा है ऐसा संक्रमण दो दिशाओं की ओर निकलता है। उपलब्धियो के साथ संतुलन बनाए रखना एक दुष्कर कार्य है लेकिन हमारे बैंक ने संतुलन और प्रगति

के बीच सामंजस्य स्थापित किया।

व्यावसायिक उपलब्धियों की दृष्टि से 80 का दशक उल्लेखनीय नहीं था परंतु यह बात संपूर्ण बैंकिग जगत पर लागू होती थी। पारंपरिक बैंकिग का यह चरम काल था लेकिन इस अवधि मे एक उल्लेखनीय बात यह रही कि आधे से अधिक राष्ट्रीयकृत बैंको को "पंजाब एण्ड सिंध" बैंक के आला अधिकारी अध्यक्ष पद को सुशोभित करते रहे और बताया जाता था कि शैक्षणिक योग्यता की दृष्टिकोण से "पंजाब एण्ड सिंध बैंक" सर्वाधिक सफल बैंक था। तीसरी कालावधि का प्रारंभ 1993 से हुआ जब अंतर्राष्ट्रीय मापदण्डों को भारत में अंगीकार किया गया और अनर्जक परिसंपत्तियों की अवधारणा का भारतीय बैंकिग जगत में प्रारंभ हुआ। वस्तुतः 1969 और 1980 के राष्ट्रीयकरण पश्चात बैंकें सामाजिक विकास की भूमिका को संभालते–संभालते अपनी मूल व्यवसायिक अवधारणा अर्थात् लाभ–हानि की व्याख्या से दूर हो गयी थी। नए मापदण्डों के लागू होते ही संपूर्ण बैंकिग जगत घाटे मे चला गया और उसके उपरांत कुछ वर्षों तक हमारा बैंक भारतीय राष्ट्रीयकृत बैंकों की फेहरिस्त में काफी नीचे चला गया। शीघ्र ही आत्मशक्ति, जिजीविषा और संकल्प ने बैंक की प्रगति के नए द्वार खोल दिए।

वर्ष 1993 के उपरांत भारतीय बैंकिग जगत ने पूर्णतः परिवर्तित

लेखा–पद्धति, जोखिमों का वर्गीकरण एवं लाभ की नई व्याख्या को आत्मसात् किया और इस प्रक्रिया में प्रायः सभी बैंकों में हानि की स्थिती उत्पन्न हुई। हमारा बैंक भी कोई अपवाद नही था। नई पद्धति में आधारभूत पूंजी की नई परिभाषा, जोखिम आधारित पूंजी पर्याप्तता पर जोर आदि ऐसे कड़े प्रावधान थे जिनके साथ सामंजस्य करने में हमारे बैंक ने समय लिया एवं जब एक बार नई व्यवस्था के साथ सात्मीकरण की स्थिती हो गई तो वह काला वर्ष भी आया, जब बैंक ने अपने तुलन–पत्र मे हानि दर्शाया। ऐसा प्रतीत होने लगा कि बैंक अपने अवसान की तरफ अग्रसर है। भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंक की व्यवस्था को सटीक एवं सुचारू करने के लिए कठोर कदम उठाए। इस निराशा के वातावरण में बैंक की उसी आंतरिक शक्ति ने बैंक को पुनः आगे बढने के लिए प्रेरित किया। इसके साथ बैंक की वह चौथी कालावधि प्रारम्भ हुई जब अध्यक्ष से लेकर निम्न स्तर के कर्मचारियों ने बैंक की प्रगति के लिए कमर कस ली।

ऋणात्मक प्रवाह से बाहर निकलकर पुनः अपने आपको सम्मानित स्थिति में लाया गया। प्रेरक नेतृत्व, आत्मविश्वास, कठोर परिश्रम और एक अध्यात्मिक शक्ति से बैंक की प्रगति का इतिहास रच दिया गया। एक ओर तुलन–पत्र मे विस्तार हो रहा था तो दूसरी ओर लाभांश मे भी वृद्धि हो रही थी। इसी चमक के साथ बैंक ने 100 वाँ वर्ष पूरा किया और उसके पश्चात लगातार लाभार्जन की स्थिती बरकरार रखते हुए सन 2010 मे बैंक ने बाजार से पूंजी एकत्रित करने के लिए अपना प्रारंभिक सार्वजनिक प्रस्ताव (आईपीओ) प्रस्तुत किया । नाम और यश के अनुरूप आईपीओ में ऐतिहासिक अंशदान किया गया जो बैंक के कार्मिकों के पूर्ण निष्ठा का ही प्रकटीकरण था। अर्थव्यवस्था में लगातार मंदी की स्थिति और कुछ अन्य कारणों से विकास के इसी स्तर पर बैंक बहुत दिनों से स्थिर है एवं क्रियात्मकता के दृष्टिकोण से प्रगतिशीलता का कुछ ह्रास अवश्य हुआ है लेकिन संपूर्ण इतिहास के सिंहावलोकन से एक बात साफ नजर आती है कि लाख झंझावत आने पर भी बैंक की जीवंतता इसके कर्मचारियों के सकरात्मक दृष्टिकोण से हमेशा नई ऊचाइयों को छूने में सक्षम रहा है। आवश्यकता है इस धरोहर पर अपने पराक्रम, अनुभव एवं निष्ठा से प्रगति हस्ताक्षर करने की। इस परिस्थितियों से उत्कर्ष की ओर प्रयाण तभी होगा जब हम अपने गौरवपूर्ण अतीत को दोहराएं तथा राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त जी की निम्न पंक्तियों की ओर अपना ध्यान आकृष्ट करें:

"हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी,
आओ, विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी ।
यद्यपि इतिहास हमें प्राप्य पूरा है नहीं।
हम कौन थे, इस ज्ञान को फिर भी अधूरा है नहीं।"

आज बैंकिंग जगत अनर्जक आस्तियों के प्रसार के कारण पुनः आपदा की स्थिति में आ गया हैं। बड़े–बड़े बैंकों की लाभप्रदता का जबरदस्त क्षरण हुआ है। कोढ़ में खाज की तरह तथाकथित बड़े–बड़े लोगों ने बैंक की प्रक्रिया का दुरुपयोग करते हुए बड़ी–बड़ी राशियों का एक तरह से गबन किया है। मिडिया की सक्रियता ने इन घटनाओं को इस तरह परोसा है कि बैंक अनावश्यक रूप से सामाजिक खलनायक के रूप में देखे जा रहे हैं। इस विकट परिस्थिति में भी धैर्य, संयम एवं प्रगतिशीलता के संकल्प के साथ हमारा बैंक व्यवस्था में विश्वास हेतु अपने नए–नए उत्पादों और कुशल नेतृत्व क्षमता के फलस्वरूप निरंतर अपनी स्थिति में सुधार कर रहा है। सामाजिक संवेदनाओं व विश्वसनीय ग्राह्यता के लिए तुलन–पत्र में अपनी विशेषताओं तथा कमजोरियों को पारदर्शिता के साथ प्रस्तुत कर रहा है और इसी राह पर चलते हुए एक उज्ज्वल भविष्य की ओर प्रत्यत्नशील है।

हमारे बैंक की प्रगति प्रवाह मे अनायास अवरोध आ गया था। अनर्जक आस्तियो की बहुलता के कारण विधिक आधार पर लाभ का बड़ा अंश संरक्षित करने से निवल लाभ का क्षरण होते–होते हानि की स्थिति आ गयी। बैंक को लगातार आठ त्रैमासिकी मे हानि ही उठानी पड़ी जिसके मूल मे सरकारी नीति मे बदलाव, आर्थिक जगत मे व्याप्त मंदी की स्थिति और फिर कोविड महामारी का दंश। यह ईश्वर की कृपा रही कि विषम परिस्थितियों मे भी हमारे उच्च प्रबंधन का धीरज और रणनीतिक कौशल, क्षेत्रीय स्तर पर बैंक कर्मियों की मेहनत और सर्वोपरि हमारे वंदनीय ग्राहकों का अटूट विश्वास संजीवनी का मंत्र बन गए। साथ ही साथ महामारी काल मे प्रधानमंत्री महोदय के आह्वान पर बैक ने सामाजिक प्रतिबद्धता का परिचय देते हुए विभिन्न योजनाओं के माध्यम से निम्न वर्गों मे महामारी जनित बेरोजगारों को ''स्वनिधि'' उपलब्ध कराया। ''कर्म प्रधान विश्व करि राखा'' का मूलमंत्र और ''अहर्निशम् सेवामहे'' के संकल्प ने तथा उच्च प्रबंधन स्तर की ऊर्जा एवं आत्म–विश्वास का परिणाम भी परिलक्षित हुआ जब बैक के तुलन पत्र मे अंकित ''लाल'' अंकों का स्थान ''सुनहरे'' शुद्ध लाभ की स्थिति आई। यह कोई सामान्य घटना नहीं है क्योकि वर्ष दर वर्ष अलाभकारी स्थिति किसी भी

व्यवसाय मे निहित ऊर्जा अवशोषित कर सकती है पर यह पंजाब एण्ड सिंध बैंक की फितरत है कि चुनौतियों का सामना डट कर किया भी है, सफल भी हुये है क्योंकि हमारा एक ही अरदास ''देहु शिवा वर मोहि इहे, शुभ करमन ते कबहुँ न टरौ'' हमारी शक्ति का स्त्रोत है। संकट तो आते ही रहते हैं परंतु जिजीविषा और प्रयास के संगम से हमने कई संकटों को भी विगत में टाला है और आज ईश्वर ने हमें पेशेवर कुशल नेतृत्व, वरिष्ठ कर्मचारियों का दीर्घकालिक अनुभव और नवयुवक कार्मिकों के ऊर्जा का अद्भुत संमिश्रण प्रसाद में दिया है। सफलता का आनंद तभी सार्थक होता है जब सफलता की ओर यात्रा मे शरीक सब इसका उत्सव मनाएं ताकि पूर्व के प्रयासो से उत्पन्न आत्म– विश्वास भविष्य के लिये प्रेरणा भी बन जाए। चालू वित्तीय वर्ष या आगामी वर्षो में बैंकिग जगत मे ऊंचाई के लिए बडे–बडे लक्ष्यों का संधान हेतु संकल्प के लिये स्थापना दिवस से उपयुक्त अवसर क्या हो सकता है। बैंक के गरिमामय इतिहास को स्मरण करने, कर्मचारियों के मध्य उत्साह का संचार करने तथा ग्राहकों के साथ अपने मधुर संबंधों के प्रकटीकरण के उद्देश्य से बैंक प्रबंधन ने इस वर्ष भी निर्णय लिया कि दिनांक 24 जून 2021 को बैंक की प्रत्येक शाखाओं में 114 वाँ स्थापना समारोह पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया जाए।

सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रबंधक

नार्दन लाइटज – ध्रुवीय ज्योति का रहस्य

याशिका कलोटा

कल्पना करें कि नीले आकाश में चमकता हुआ गुलाबी, सुनहरा पीला, चमकता केसरी या अनोखा हरा प्रकाश। यह रात को आकाश में चमकता इंद्रधनुष किसी परीकथा या ख्वाबों की दुनिया का हिस्सा लगता है परन्तु आपको जानकर अचरज होगा कि कुदरत का यह करिश्मा हमारी अदभुत पृथ्वी का ही अंश है।

नॉर्दन लाइटस (Aurora Borealis) एक प्रकार से प्राकृतिक रोशनी ही है जो विशेष रूप से पृथ्वी के उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्रों में दिखाई देती है। कुछ देश जहाँ पर आप इस अदभुत दृश्य को अनुभव कर सकते हैं वह है–आइसलैंड, फिनलैंड, उत्तरी कनाडा तथा स्वीडन।

गौर फरमाने वाली बात यहाँ पर यह भी है कि आप दक्षिणी ध्रुवीय इलाकों में भी इस तरह रोशनी को देख सकते हैं। दक्षिणी ध्रुवीय इलाकों में दिखाई देने वाली रोशनी को Aurora Australis कहते हैं और यह दक्षिणी ध्रुवीय इलाकों जैसे अंटार्टिका और ऑस्ट्रेलिया में दिखाई देती है। देखने में काफी आकर्षक ये रोशनी रात के समय में ध्रुवीय आकाश में अपनी अद्भुत छटा बिछा कर मनुष्य को न केवल अचंभित करती है बल्कि हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि प्रकृति की अभी भी कई पहेलियाँ मनुष्य को अचरज करने में सक्षम है लेकिन इस पहेली का उत्तर जरूर है। जितनी दिलचस्प यह रोशनी है इनके पीछे का रहस्य भी उतना ही दिलचस्प है और यह उत्तर ज्यादा भी पेचीदा नही है। इस अद्भुत रोशनी का रहस्य है सूर्य। जी हाँ मूल रूप से रात में दिखाई देने वाली यह खूबसूरत रोशनी सूर्य से ही बनती है अब प्रश्न यह है कि रात में दिखाई देने वाली यह रोशनी का सूर्य से क्या रिश्ता।

यह तो सभी जानते ही है कि सूर्य ही पृथ्वी पर शक्ति का आधार है और सूर्य ही पृथ्वी पर प्रकाश और ताप की ऊर्जा भेजता है। यह तरंगों के आकार में सूर्य से पृथ्वी तक पहुँचती है। तरंगों में कई प्रकार के ऊर्जा के कण भी मौजूद रहते हैं जो पृथ्वी में मौजूद रहते हैं और पृथ्वी में मौजूद जीवन के लिए बहुत जरूरी है। हालांकि ज्यादातर ऊर्जा के कण सूर्य के बाहरी वातावरण मे रह जाते हैं। पृथ्वी के बाहरी इलेक्ट्रो–मेगनेटिक क्षेत्र सूर्य से आने वाली ज्यादातर ऊर्जा के कणों को अपने अंदर सोख लेती है और इसी के कारण पृथ्वी का ये स्तर हमें सूर्य से आने वाली घातक कणों से हमारी रक्षा करता है, पर "सोलर विंड"(Solar Wind) सोलर स्ट्रोम्स (Solar Storms) से काफी ज्यादा ऊर्जा के कण बनते हैं। इस स्ट्रोम के कारण अंतरिक्ष में Electrified charged particles काफी तेजी से बन कर निकलते हैं ऐसे में जब यह Electrified Particles पृथ्वी के पास से होकर निकलते हैं तब पृथ्वी का बाहरी इलेक्ट्रो मेगनेटिक क्षेत्र इस particles को अपने अंदर सोख लेता है, क्योंकि ध्रुर्वीय इलाको में यह क्षेत्र ज्यादा शक्तिशाली होता है तो इसी क्षेत्र में यह अदभुत रोशनी दिखाई देती है।

एक दिलचस्प बात और है कि पृथ्वी के जलवायु में मौजूद अलग–अलग गैस ऊर्जा के कणों के साथ अलग रंग की रोशनी बनाती है। वायुमण्डल में मौजूद ऑक्सीजन ऊर्जा के कणों के साथ मिलकर लाल और हरे रंगो की रोशनी बनाती है और नाइट्रोजन नीले और बैंगनी रंग की। इस लेख का अंत करते हैं कि यह एक दिलचस्प तथ्य से यह रोशनी सिर्फ पृथ्वी पर ही नहीं अपितु अन्य कई सारे ग्रहों में भी दिखाई देती है।

आंचलिक कार्यालय, चंडीगढ़

ग्राहक के मुख से

महोदय,

बैंक की तिलक नगर शाखा से यदि थोड़ा सा ही आगे जाएंगे तो मेन रोड पर ही एक बड़ा सा शो–रूम है सुंदरम के नाम से, जहाँ आपको सभी बड़े–बड़े ब्रांड के कपड़े मिलेंगे। सुंदरम की स्थापना 1970 में हुई थी और तभी से हम पंजाब एण्ड सिंध बैंक की तिलक नगर शाखा से जुड़े हैं। तब से अब तक शाखा का कायाकल्प होता रहा है और उसके साथ–साथ हमारे व्यवसाय को भी चार चाँद लगते रहे हैं। इस बैंक ने हमारे लिए एक पालक का किरदार निभाया है। शाखा में हमारी सीसी लिमिट खाता सुंदरम के नाम से है, इसके साथ ही सांघी ओवरसीज, जिसकी स्थापना सन 2010 में की गई। हमारी संस्था में लगभग 12 कर्मचारी हैं जिनके वेतन खाते भी तिलक नगर शाखा में ही है। सुंदरम की स्थापना मेरे पिता द्वारा की गई थी मुझे आदित्य एस. सांघी को सुंदरम विरासत में मिला है लेकिन मुझे जिस प्रकार अपने पिता से विरासत में व्यवसाय की सीख मिली, उसी तरह बैंक के सभी कर्मचारियों का सहयोग भी मुझे प्राप्त हुआ और मुझे कभी किसी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा और शायद यही कारण है कि हमारा व्यवसाय निरंतर उन्नति कर रहा है।

मेरे परिवार के सभी सदस्यों के बचत खाते, एफडीआर भी इसी शाखा में है और लॉकर भी। आसपास अन्य सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक भी हैं, निजी बैंक भी हैं जो तकनीक रूप से कहीं ज्यादा विकसित है किंतु कुछ ऐसा अपनापन और अनूठा रिश्ता पंजाब एण्ड सिंध बैंक से है कि कहीं और जाने का सवाल ही नहीं होता। इसका सारा श्रेय यहाँ के शाखा प्रबंधक और स्टाफ सदस्यों को जाता है। चाहे जनधन खाते खुलने का समय था या नोटबंदी का, सभी स्टाफ सदस्यों ने पूरी निष्ठा ओर लगन से अपना कार्य किया। पूरा देश आज कोविड–19 से जूझ रहा है। तिलक नगर शाखा ऐसे स्थान पर है जहाँ सदैव भीड़ रहती है लेकिन बैंक कर्मचारी अपना कार्य पूरी मेहनत से कर रहे हैं।

मेरी तहे दिल से ईश्वर से प्रार्थना है कि बैंक सफलता के नए आयाम प्राप्त करे।

आदित्य एस सांघी
सुंदरम
सांघी ओवरसीज

हिंदी कार्यशाला

अंचल कार्यालय – मुंबई

अंचल कार्यालय – भोपाल

अंचल कार्यालय – जयपुर

अंचल कार्यालय – गुरूग्राम

अंचल कार्यालय – होशियारपुर

अंचल कार्यालय – गुरदासपुर

स्टाफ प्रशिक्षण महाविद्यालय – रोहिणी, नई दिल्ली

खुशबू गुप्ता

कड़वा सच

परिवार के साथ बिताया हुआ समय अमूल्य होता है जिसके लिए जो भी प्रयास करने पड़ें, करने चाहिए। माता–पिता के साथ जितना हमारा समय महत्वपूर्ण है उससे ज्यादा हमारे साथ उनका समय महत्वपूर्ण है। पवन ने दिल्ली की एक लड़की से ब्याह कर लिया, मास्टर रामलाल और उनकी पत्नी भी इसमें शामिल हुए। बेटे के 10–12 फीट के कमरे को देखकर मास्टर जी और उनकी पत्नी काफी दुखी हुए और उसे घर लौटने के लिए कहा। वहाँ उनका दो मंजिला मकान अब भी पवन का इंतजार कर रहा था लेकिन उसने मना कर दिया।

कुछ दिनों बाद मास्टर जी अपनी पत्नी के साथ वापिस लौट गए। 15 वर्ष बीत गए पवन को दिल्ली में रहते हुए। अब वह दो बच्चों का पिता था। बच्चे हमेशा अपने दादा–दादी के बारे पूछा करते। पवन पहले उन्हें बहलाता, फिर डांट देता। इतने वर्षों में भी पवन का गुस्सा अपने पिता मास्टर रामलाल के लिए कम न हुआ। इसी बीच एक दिन खबर आई कि पवन की माँ गुजर गई। पवन अपने परिवार के पास कुछ दिनों के लिए अपने घर कलकत्ता लौटा। अब सभी कार्यक्रम बीत जाने के एक सप्ताह बाद दिल्ली लौट आया। मास्टर जी के बार–बार रोकने पर भी वह नहीं रुका। आखिरकार बेमन से उसने मास्टर जी को अपने साथ चलने को कहा, फिर बिना जबाव सुने कमरे से चला गया। मास्टर जी उसके साथ जा न सके और फिर पवन अपने परिवार के साथ दिल्ली लौट गया। पवन अपने जीवन में व्यस्त हो गया और बढ़ती उम्र के साथ मास्टर जी अकेलेपन से कमजोर होते चले गए। मास्टर जी अब अपने निर्णय पर पछताते रहते और अपने कमरे में रोते रहते। पवन के बचपन के दिनों को याद करते, उसके खिलौनों को छूते और फिर फफक–फफक कर रोते लेकिन उनके रोने की सिसकियों को दीवारों, तस्वीरों, टेबल और कुर्सियों के अलावा सुनने को कोई न था।

उधर पवन अपने छोटे से कमरे में अपने परिवार के साथ खुश

था। एक दिन पास में ही शर्मा परिवार द्वारा उसके बूढ़े माता–पिता मिस्टर एण्ड मिसेस शर्मा को घर से निकालते हुए देख पवन को गुस्सा आया और उसने बीच–बचाव किया। बाद में शर्मा जी के परिवार को उसने अपने घर में आश्रय देना चाहा। तभी उसके मोबाइल की घंटी बजी और उधर से खबर आई कि मास्टर रामलाल जी का देहांत हो गया। यह सुनकर पवन के हाथ जैसे सुन्न पड़ गए हों, उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि क्या प्रतिक्रिया दे। उस पल उसकी आँखों के सामने वो सारे बचपन के पल आ रहे थे जो उसने अपने पिता के साथ बिताए थे। पवन को लगा कि सारी दुनिया घूम रही हो और उसके हाथ पैर काँपने लगे। फोन की पूरी बातें भी वह सुन नहीं पाया और आँखों में आँसू लिए अपने परिवार के पास लौट आया एवं रुआँसे गले से अपने बच्चों से कहा– 'तुम्हारे दादा जी हम सबको छोड़, भगवान के पास चले गए'।

अपने परिवार के साथ पवन कलकत्ता के लिए तुरंत निकल पड़ता है। वहाँ पहुँचकर अपने पिता का अंतिम संस्कार करने के पश्चात जब वह घर आता है, तभी पड़ोस के चाचा जी उससे मिलने आते हैं। उनके हाथ में कलकत्ता वाले घर के कागज देखकर पवन को लगा कि आज से 20 वर्ष पहले उसके पिता ने यह घर न बेचकर

उसकी बात नहीं मानी थी, शायद जाते–जाते वो अपनी गलती सुधार गए पर शायद वो अपने पिता को कभी समझ ही नहीं पाया था। चाचा जी ने जब वसीयतनामा पढ़ा तो पता चला कि पवन के पिता यह घर अपने शहर के एक गैर–सरकारी संगठन के नाम कर गए हैं। जाते–जाते वो पवन के लिए एक पत्र लिखकर गए थे। पत्र में लिखा था– " प्रिय पवन ! मुझे नहीं पता था कि यह घर जिसमें तुम्हारा बचपन संजोया हुआ था, तुम्हारे लिए सिर्फ चार दीवारें हैं। तुम दिल्ली में अपना आशियाना बनाना चाहते थे पर कभी अपने माता–पिता के सपनों के इस महल का मतलब नहीं समझ पाए। माना कि मैंने इस घर को बेचने के लिए तुम्हारे निर्णय पर अपनी सहमति नहीं दी पर, क्या यह एक वजह काफी थी इतने वर्षों तक उस पिता से बात नहीं करने के लिए, जिसने तुम्हें सपने देखना सिखाया। नाराजगी तो मुझसे थी तुम्हारी.... तो फिर उस माँ से भी मिलने नहीं आए जिसने तुम्हारी हर एक गलती पर तुम्हें मेरी डांट से बचाया, तुम्हें खुद से पहले रखा। आज मैंने तुम्हारी माँ के जाने के पश्चात बहुत सोचा कि जो बेटा बुढ़ापे के इस पड़ाव पर अपने माँ–बाप का न हो सका, जिसने जीते–जी इस घर की ईटों को चार दीवारी बना दिया वो क्या हमारे जाने के बाद इसको संभाल कर रख पाएगा इसलिए मैं यह घर गैर–सरकारी संगठन के नाम करके जा रहा हूँ। जिस दिन तुम अपनी खुद की मेहनत से अपना घर बनाओगे और जिस दिन तुम्हारे बच्चे बड़े हो जाएंगे और तुम्हारी बात नहीं मानेंगे, शायद! उस दिन तुम पिता का मतलब समझोगे। जिस दिन तुम्हें मेरी कही गई बातें सही लगे उस दिन समझ लेना कि मैंने तुम्हें माफ कर दिया है और हो सके तो अपना कुछ समय इस गैर–सरकारी संगठन के बच्चों को दे देना क्योंकि जब तुम्हारे माँ–बाप को तुम्हारी जरूरत थी तो तुम नहीं यह बच्चे हमारे साथ थे। "

आज पवन के पिता को गुजरे हुए दस साल हो गए हैं और आज भी कलकत्ता का यह घर जिसमें गैर–सरकारी संगठन की दूसरी शाखा खुली है, उसका रास्ता देख रही है...।

अंचल कार्यालय – गुरुग्राम

प्रकृति के सुकुमार कवि – सुमित्रानंदन पंत

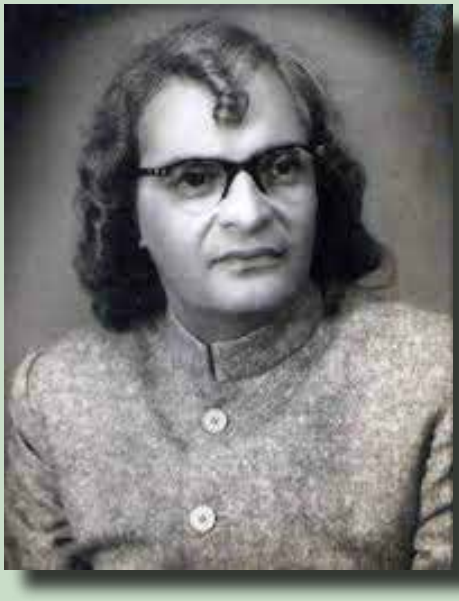

प्रकृति के कोमल कल्पना के कवि श्री सुमित्रानंदन पंत का जन्म 20 मई 1900 को उत्तराखंड राज्य के कौसानी ग्राम में हुआ। हिंदी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से पंत जी एक हैं। इनके बचपन का नाम गोसाईं दत्त था जिसे बाद में बदलकर उन्होंने सुमित्रानंदन पंत रख लिया। पंत जी की भाषा चित्रमयी रही, इन्होने खड़ी बोली को मृदुलता प्रदान की।

पंत जी मूलतः प्रेम व सौंदर्य के कवि हैं। जहाँ प्रारंभिक कविताओं में प्रकृति और सौंदर्य के चित्रण मिलते हैं वहीं दूसरे चरण की कविताएं छायावाद की सूक्ष्म कल्पनाओं व कोमल भावनाओं से परिपूर्ण है। इनके सबसे कलात्मक कविताओं का संग्रह 'पल्लव' सन् 1926 में प्रकाशित हुआ। पल्लव 1918 से 1925 तक लिखी गई 32 कविताओं का संग्रह है।

वीणा, पल्लव, ग्रंथि, गुंजन इत्यादि पंत जी के प्रमुख काव्य–संग्रह शामिल है। 'लोकायतन' पंत जी का महाकाव्य है जिसका प्रकाशन 1964 में हुआ था। 'कला और बूढ़ा चाँद' के लिए 1960 में पंत जी को साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा चिदंबरा पर 1968 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से इन्हें सम्मानित किया गया। हिंदी साहित्य सेवा के लिए उन्हें 1961 में पद्मभूषण से अलंकृत किया गया था।

बिभाष कुमार

कोविड विशेष ऋण योजना आरोग्यम, कवच और संजीवनी की आवश्यकता एवं महत्व

पिछले एक वर्ष से अधिक समय से कोविड–19 जैसे वैश्विक महामारी के दौर से हम सभी गुजर रहे है। महामारी की रोकथाम और उसके प्रसार को रोकने के लिए पिछले वर्ष और इस वर्ष भी लॉकडाउन के विकल्प को चुना गया। लॉकडाउन के विकल्प को चुनने के कारण आर्थिक गतिविधियों को एवं अर्थव्यवस्था को काफी नुकसान पहुंचा है। पिछले वर्ष कोविड–19 के प्रथम लहर की चुनौतिओं से अर्थव्यवस्था को उबारने हेतु भारत सरकार द्वारा विशेष आर्थिक पैकेज की घोषणा की गई थी जिसे प्रभावी बनाने में बैंको विशेष योगदान रहा है।

कोविड–19 की दूसरी लहर के कारण देश की अर्थव्यवस्था के साथ –साथ स्वास्थ्य सेवाओं पर काफी दबाव देखने को मिला। देश में स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े व्यक्तियों, संस्थाओं एवं ऐसे लोगों जो कोविड–19 से प्रभावित हुए है, को तत्काल आर्थिक ऋण उपलब्ध हो सके इस उद्देश्य से भारतीय रिजर्व बैंक के मार्गदर्शन में आरोग्यम, कवच और संजीवनी जैसे तीन विशेष कोविड ऋण योजना को लांच किया गया।

कोविड –19 वैश्विक महामारी के बीच स्वास्थ क्षेत्र में उपरोक्त तीनों ऋण योजनाओं के माध्यम से निवेश हेतु अपार संभावनाएं हैं। कोविड –19 के प्रथम लहर के समय स्वास्थ्य क्षेत्र की चुनौती कुछ अलग थी तो दूसरी लहर में कुछ और देखने को मिला। स्वास्थ्य सेवाओं पर आए दबाब के कारण संसाधनों का अभाव देखने को मिला परंतु हम सभी उससे लड़कर बाहर आए। पिछले वर्ष कोविड के प्रथम लहर के समय देश में एक भी पीपीई कीट का निर्माण नहीं हो रहा था परंतु देश के संकल्प के कारण आज विश्व के दूसरे सबसे बड़े पीपीई कीट उत्पादक बन गए है। भारत जैसे विकासशील देशों में स्वास्थ्य सेवाओं एवं उनसे जुड़ी गतिविधियों में निवेश की काफी संभावनाएं है। कोविड के इस दूसरी लहर के बीच आए इन तीन ऋण योजनाएं की अंतिम तिथि 31 मार्च 2022 तक रखी गई है। शायद ये योजनाएं इसके बाद प्रभावी नहीं रहें। परंतु आगामी वर्षो में इस क्षेत्र में निवेश की अपार संभावनाएं है। कोविड की दूसरी लहर से मिले अनुभव के मद्देनजर सरकारी एवं निजी क्षेत्रों

की कंपनियों द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं एवं इनके उत्पादों के निर्माण हेतु भारी निवेश की संभावना है। टीयर–1 ,टीयर–2 शहरों से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों तक समुचित स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हो सके इस दिशा में प्रयास किए जाएंगे। एक अनुमान के अनुसार आगामी पाँच वर्षों में स्वास्थ्य सेवाओं एवं उनसे जुड़े उत्पाद का बाजार भारत में बढ़कर पाँच गुना हो जाएगा। इस रैपिड ग्रोथ पर विश्वास हम इस उदाहरण के माध्यम से कर सकते है कि पीपीई किट के उत्पादन में हम मात्र 60 दिनों के भीतर 56 गुना से अधिक की वृद्धि दर्ज करते हुए विश्व के दूसरे सबसे बड़े उत्पादक बन गए। यह हमारी इच्छा शक्ति एवं दृढ़ संकल्प का सबसे बड़ा प्रमाण है।

देश के आर्थिक विकास के साथ–साथ भारत सरकार पर स्वास्थ्य सेवाओं में निवेश करने का दबाब भी बढ़ रहा है। आने वाले वर्षों में सरकारों द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं को उच्च प्राथमिकता में रखते हुए भारी निवेश किया जाएगा। चूंकि भारतीय संविधान के अनुसार स्वास्थ्य सेवा को राज्य सूची में शामिल किया गया हुआ है इसलिए केन्द्र सरकार के साथ–साथ राज्य सरकारों द्वारा भी स्वास्थ्य सेवाओं एवं उनसे जुड़ी चीजों में प्राथमिकता के आधार पर निवेश किए जाने की संभावनाएं है। जन कल्याणकारी राज्य होने के नाते स्वास्थ्य सेवाओं जैसी जीवन की मूल आवश्यकता वाले क्षेत्रों में सरकारी निवेश के माध्यम से ही सुदूर गाँव तक मूलभूत स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाई जा सकेगी। कोविड–19 जैसे वैश्विक महामारी के

बच्चों का हृदय कोमल भाला है, चाहे इसमें कटीली झाड़ी लगा दो, चाहे फूलों के पौधे – जयशंकर प्रसाद

समय विकसित देशों में जहां स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति चरमरा गई थी तो वही 135 करोड़ वाले देश ने जहाँ यूरोप एवं अमेरिका जैसी उन्नत एवं विकसित स्वास्थ्य संस्थान नहीं होने के बाद भी कोविड की दूसरी लहर से संघर्ष करने का दम दिखाया है।

कोविड–19 का खतरा अभी टला नहीं है। कोविड के दोनों टीका लेने के बाद भी कोविड से शत–प्रतिशत सुरक्षा मिलने का दावा नहीं किया जा सकता है। ऐसे स्थिति में जहाँ अभी तक कोई यह दावा नहीं कर सकता कि इससे बचने का फूलप्रूफ कोई तरीका हमारे पास है। ऐसी स्थिति में हम स्वतः अनुमान लगा सकते है कि कोविड–19 के विषम परिस्थितियों के साथ हमें जीने की आदत विकसित करनी होगी। साथ ही टीकाकरण के साथ–साथ स्वास्थ्य सेवाओं एवं उससे संबंधित उत्पादों को और अधिक मजबूत करना होगा जिससे दूसरी लहर जैसी विषम परिस्थितियों से भी लड़ने की क्षमता विकसित हो सके।

भारत सरकार की योजना एवं उसके कार्यान्वयन की निगरानी की सर्वोच्च संस्था नीति आयोग ने अपने एक अध्ययन में कहा है कि स्वास्थ्य सेवा से जुड़े निजी क्षेत्र के बड़े निवेशकों द्वारा मेट्रो शहर के अलावा टीयर 1 और टीयर 2 शहरों में निवेश की आकर्षक संभावना प्रदान कर रही है। बजट पूर्व चर्चा के दौरान उद्योगपतियों के संगठन सीआईआई ने भी सरकार से स्वास्थ्य सेवाओं में कुल जीडीपी का 2.5 से 3 प्रतिशत तक निवेश करने का सुझाव दिया था। विश्व के विकसित देशों से अपने जीडीपी अनुपात की तुलना में स्वास्थ्य सेवाओं पर कुल व्यय देखते तो यह आधे से भी कम बैठता है। डब्लूएचओ के एक अध्ययन के अनुसार कोविड –19 के प्रारंभ होने से पूर्व ही विकसित देश अपने जीडीपी का लगभग 10 प्रतिशत स्वास्थ सेवाओं पर खर्च करते रहे है। इस दृष्टि से अगर तुलना करें तो कुल जीडीपी अनुपात में खर्च काफी कम है। विकसित देशों द्वारा किए जाने वाले व्यय प्रतिशत की दृष्टि से देखें तो यह लगभग एक चौथाई से भी कम बैठता है। हम विकासशील देशों एवं एशिया के अन्य देशों खासकर सार्क देशों से भी तुलना करें तो भी अधिकांश देशों से हम स्वास्थ क्षेत्र में कम व्यय करते है। इस दृष्टि से हमें आरोग्यम , कवच और संजीवनी ऋण योजना के अंतर्गत अपार ऋण आबंटन की संभावना दिखती है। हमें इस अवसर को पहचानते हुए इस दिशा में सकारात्मक प्रयास करते रहने की आवश्यकता मात्र है। इसकी पुष्टि इस बात से हो जाती है कि पिछले वर्ष कोरोना के विषम परिस्थितियों के बीच भी जहाँ जीडीपी विकास दर नकारात्मक रहा हो, स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े उत्पादों में लगभग 15 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। आगामी चार–पाँच वर्षों में देश में स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े चीजों के उत्पादन में लगभग पाँच गुना वृद्धि की संभावना का अनुमान विश्लेषक लगा रहे है। आरोग्यम, संजीवनी योजना के माध्यम से अधिक से अधिक ऋण आबंटित करके तेजी से उभरते इस क्षेत्र में अपनी हिस्सेदारी को मजबूत करने का सुनहरा विकल्प हमारे (बैंक) पास है। शिव खेड़ा का एक प्रसिद्ध कथन है सफल व्यक्ति काम वही करते है परंतु काम करने का ढंग अलग होता है। सभी बैंक ऋण आबंटित है परंतु संभावनाओं से पूर्ण क्षेत्र में ऋण आबंटित करके हम ऋण आबंटित करने की गति को बढ़ा सकते है साथ ही अपने ऋण पोर्टफोलिओं को भी सुरक्षित रख सकते है।

कोविड–19 के संभावित तीसरे से पहले स्वास्थ्य सेवाओं एवं उसके उत्पाद एवं कोविड से प्रभावित व्यक्तियों को केंद्र में रखते हुए कोविड विशेष ऋण योजना आरोग्यम, कवच और संजीवनी समय की समय की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए सबसे प्रभावकारी एवं प्रासंगिक योजना है। जैसा कि नाम से ही इन योजनाओं के मूल भाव स्पष्ट हो जाते है। कवच ऋण योजना के अंतर्गत वेतनभोगी एवं पेंशनर वैसे ग्राहक को जो उस बैंक के ग्राहक है और कोविड–19 से प्रभावित हुए हैं, न्यूनतम ₹25 हजार से अधिकतम ₹5 लाख तक का ऋण दिया जा सकता जिससे वे अपने उपचार में हुए खर्च की प्रतिपूर्ति कर सके इस बात को दृष्टि में रखते हुए इस योजना की रूपरेखा तैयार की गई है। अन्य दो ऋण योजनओं आरोग्यम एवं संजीवनी स्वास्थ्य सेवाओं एवं उनसे जुड़े उत्पादों से जुड़े लोगों को अपनी क्षमता विकसित कर सके इसी के मद्देनजर विकसित किया गया है। आरोग्यम के अंतर्गत तमाम तरह की स्वास्थ्य सेवाओं एवं उत्पादों को रखा गया है।

संजीवनी की चर्चा इसलिए विशेष रूप से यहाँ करना चाहते है कि कोविड–19 के दूसरे लहर के समय देश–व्यापी आक्सीजन की कमी देखी गई थी। कारखानों में प्रयुक्त होने वाले ऑक्सीजन को भी स्वास्थ्य सेवाओं में प्रयुक्त करने के बाद भी उसकी कमी से जूझते रहे। ऐसी स्थितियों से भविष्य में बचने के उद्देश्य से विशेष रूप से ऑक्सीजन के उत्पादन एवं उसके भंडारण के मद्देनजर संजीवनी ऋण योजना को तैयार किया गया है। स्वास्थ्य संबंधित भविष्य की चुनौतीओं से लड़ने की तैयारी के दृष्टिकोण से संजीवनी एवं आरोग्यम की आने वाले समय में महती भूमिका होने वाली है। वैसे इन योजनाओं की अवधि को इस वित्तीय वर्ष की समाप्ति तक प्रभावी रखा गया है परंतु इतने विशाल जनसंख्या वाले देश में जहां स्वास्थ्य सेवाओं में निवेश की अनंत संभावनाएं विद्यमान है वैसे स्थिति में बैंको द्वारा इन योजनाओं को आगे भी ले जाने में भी कोई हानि नहीं दिखता है। आशा है इन योजनाओं से देश में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति में काफी सुधार आएगा। देशवासियों को महानगर से लेकर छोटे शहर एवं गाँवों तक समुचित स्वास्थ्य सुविधाएं विकसित हो सके इस दृष्टि से इस योजनाओं का विशेष महत्व रहेगा।

स्टाफ प्रशिक्षण महाविद्यालय
रोहिणी, दिल्ली

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा दिनांक

धूर्त मनुष्य अध्ययन का तिरस्कार करते हैं, सरल मनुष्य उसकी प्रसंशा करते हैं और ज्ञानी पुरूष उसका उपयोग करते हैं – बेकन

08.04.2021 को अंचल कार्यालय दिल्ली–1 का राजभाषाई निरीक्षण

विश्व पर्यावरण दिवस

पूजा अग्रवाल

स्वस्थ जीवन के लिए पर्यावरण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह हमें हवा, भोजन इत्यादि प्रदान करता है। किसी ने सही कहा है कि ''जानवरों और मनुष्यों के बीच अंतर यह है कि जानवर पर्यावरण के लिए खुद को बदलते हैं, लेकिन मनुष्य अपने लिए पर्यावरण को बदलते हैं।'' पर्यावरण हमारे अड़ोस–पड़ोस की तरह ही तो है, इसकी आसपास की परिस्थितियां हमें प्रभावित करती हैं और विकास की गति को बदलती हैं। दुनिया भर में वनों की कटाई, बढ़ते ग्लोबल वार्मिंग, अपव्यय और भोजन, प्रदूषण इत्यादि जैसे पर्यावरणीय मुद्दों को संबोधित करना आवश्यक है। एलेन मैकआर्थर फाउंडेशन द्वारा किए गए एक अध्ययन में कहा गया है कि दुनिया में अब तक लगभग 6.3 बिलियन टन प्लास्टिक कचरा उत्पन्न हुआ है और इसके लगभग 90% भाग को विघटित करने के लिए कम से कम 500 वर्ष लगेंगे। वैज्ञानिकों के अनुसार मिट्टी, नल का पानी, बोतलबंद पानी, बीयर और यहां तक कि जिस हवा में हम सांस लेते हैं, उसमें माइक्रो–प्लास्टिक या छोटे टुकड़े पाए गए हैं जो हमारे शरीर में जाते है।

वर्ष 1972 ने अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय राजनीति के विकास में एक महत्वपूर्ण मोड़ आया। संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में बुलाई गई पर्यावरण संबंधी समस्याओं पर पहला बड़ा सम्मेलन, स्टॉकहोम (स्वीडन) में 5 जून से 16 जून तक आयोजित किया गया। यह मानव पर्यावरण पर सम्मेलन के रूप में भी जाना जाता है। इसका लक्ष्य मानव पर्यावरण को संरक्षित करने और विभिन्न चुनौती से निपटने के लिए एक बुनियादी सामान्य दृष्टिकोण बनाना था। बाद में उसी वर्ष, 15 दिसंबर को, महासभा के एक संकल्प के तहत 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की।

वर्ष 1974 में पहली बार **''केवल एक पृथ्वी'' ("Only one Earth")** के स्लोगन के साथ विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया और इसकी मेजबानी संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा की गई थी। तब से विश्व पर्यावरण दिवस प्रत्येक वर्ष 5 जून को एक वार्षिक कार्यक्रम के रूप में

मनाया जाने लगा ताकि मानव जीवन में स्वस्थ और हरित पर्यावरण के महत्व को बढ़ाया जा सके तथा सरकार, विभिन्न संगठनों द्वारा सकारात्मक पर्यावरणीय क्रियाओं को लागू करके पर्यावरण के मुद्दों को हल किया जा सके। बाद के वर्षों में, विश्व पर्यावरण दिवस हमारे पर्यावरण के सामने आने वाली समस्याओं जैसे वायु प्रदूषण, प्लास्टिक प्रदूषण, अवैध वन्यजीव व्यापार, पर्यावरण के प्रति लोगों की जागरूकता बढ़ाने के लिए एक मंच के रूप में विकसित हुआ है। इसके अलावा, विश्व पर्यावरण दिवस राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण नीति में बदलाव लाने में मदद करता है।

विश्व पर्यावरण दिवस के आयोजन का उद्देश्य : पर्यावरण के मुद्दों

के बारे में आम लोगों में जागरूकता फैलाना, विभिन्न समाज और समुदायों के आम लोगों द्वारा सक्रिय रूप से भाग लेने, पर्यावरण सुरक्षा उपायों को विकसित करने में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित करना है। सुरक्षित, स्वच्छ और अधिक समृद्ध भविष्य का आनंद लेने के लिए लोगों को अपने आस–पास के परिवेश को सुरक्षित और स्वच्छ बनाने के लिए प्रोत्साहित करना तथा विश्व सरकारों, उद्योगों, समुदायों से आग्रह करना और लोगों को पर्यावरण के महत्व और इसको कैसे संरक्षित किया जा सकता है के बारे में एकजुट करने का प्रयास करना मुख्य उद्देश्य है।

दुनिया भर में पर्यावरण दिवस को प्रभावी बनाने के लिए हर वर्ष एक विशेष थीम और स्लोगन रखा जाता है। उस थीम पर कई अभियानों का आयोजन भी किया जाता हैं। कार्बन तटस्थता प्राप्त करने, ग्रीनहाउस प्रभावों को कम करने, वन प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करने, खराब भूमि पर वृक्षों का रोपण, सौर स्रोतों के माध्यम से ऊर्जा उत्पादन, प्रवाल भित्तियों और मैन्ग्रोव को बढ़ावा देने, नई जल निकासी प्रणाली विकसित करने इत्यादि के लिए विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है।

विश्व पर्यावरण दिवस 2021 थीमः पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली (Ecosystem Restoration)

विश्व पर्यावरण दिवस 2021 का विषय **"पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली"** है। पारिस्थितिक तंत्र की बहाली? पारिस्थितिक तंत्र की बहाली का मतलब है कि उन पारिस्थितिक तंत्रों को सुधारने में सहायता करना जो कि खराब या नष्ट हो चुके हैं, साथ ही उन पारिस्थितिक तंत्रों का संरक्षण करना जो अभी भी बरकरार हैं। समृद्ध जैव विविधता के साथ स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र, अधिक उपजाऊ मिट्टी, लकड़ी और मछली की बड़ी पैदावार और ग्रीनहाउस गैसों के बड़े भंडार जैसे अधिक लाभ प्रदान करते हैं। बहाली कई तरीकों से हो सकती है – उदाहरण के लिए सक्रिय रूप से वृक्षों के रोपण के माध्यम से या उन अवरोधों को हटाकर ताकि प्रकृति अपने आप ठीक हो सके। उदाहरण के लिए, हमें अभी भी उस भूमि पर कृषि भूमि और बुनियादी ढांचे की आवश्यकता है जो कभी जंगल थे, और पारिस्थितिक तंत्र, जैसे समाज को बदलती जलवायु के अनुकूल होने की आवश्यकता है।

प्रत्येक वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस अलग–अलग देश द्वारा आयोजित किया जाता है, जिसमें आधिकारिक समारोह होते हैं इसी कड़ी में इस वर्ष की मेजबानी पाकिस्तान को दी गई। पाकिस्तान सरकार ने पाँच वर्षों में फैली **"10 बिलियन ट्री सुनामी"** के माध्यम से देश के जंगलों का विस्तार करने और उन्हें पुनर्स्थापित करने की योजना बनाई है। अभियान में मैंग्रोव और जंगलों को बहाल करना शामिल है, साथ ही साथ शहरो में पेड़ लगाना जिसमें स्कूल, कॉलेज, सार्वजनिक पार्क और हरित क्षेत्र शामिल हैं। 10 बिलियन ट्री सुनामी के माध्यम से, पाकिस्तान बॉन चौलेंज में योगदान दे रहा है, जो संयुक्त राष्ट्र दशक से पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली से जुड़ा एक वैश्विक प्रयास है।

पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली पर संयुक्त राष्ट्र का दशक (2021–2030) – संयुक्त राष्ट्र महासभा के सदस्य देशों में से 70 से अधिक देशों द्वारा दिए गए प्रस्ताव के अनुसार पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली पर संयुक्त राष्ट्र दशक की घोषणा की है। यह लोगों और प्रकृति के लाभ के लिए, दुनिया भर में पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षण और पुनरुद्धार के लिए आह्वान है। इसका उद्देश्य पारिस्थितिक तंत्र के क्षरण को रोकना और वैश्विक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उन्हें पुनर्स्थापित करना है। केवल स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र के साथ ही हम लोगों की आजीविका को बढ़ा सकते हैं, जलवायु परिवर्तन का प्रतिकार कर सकते हैं और जैव विविधता के पतन को रोक सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र का दशक 2021 से 2030 तक है, जो कि सतत विकास लक्ष्यों की समय–सीमा भी है और समय–रेखा भी। वैज्ञानिकों ने विनाशकारी जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए अंतिम अवसर के रूप में पहचान की है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (United Nations Environment Programme) और

विश्व पर्यावरण दिवस

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (Food and Agriculture Organization) के नेतृत्व में, संयुक्त राष्ट्र दशक एक मजबूत, व्यापक–आधारित वैश्विक आंदोलन का निर्माण कर रहा है ताकि बहाली को गति दी जा सके और दुनिया को भविष्य में एक स्थाई ट्रैक पर रखा जा सके।

2021 से 2030 के बीच, 350 मिलियन हेक्टेयर के अवक्रमित स्थलीय और जलीय पारिस्थितिक तंत्र की बहाली से पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं में 9 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का उत्पादन हो सकता है। बहाली वातावरण से 13 से 26 गीगा टन ग्रीनहाउस गैसों को भी हटा सकती है। इस तरह के हस्तक्षेपों का आर्थिक लाभ निवेश की लागत के नौ गुना से अधिक है जबकि निष्क्रियता पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली की तुलना में कम से कम तीन गुना अधिक महंगा है। जंगलों, खेतों, शहरों, आर्द्रभूमि और महासागरों सहित सभी प्रकार के पारिस्थितिक तंत्रों को बहाल किया जा सकता है सभी देशों द्वारा 2030 तक दुनिया की 35 करोड़ हेक्टेयर वनों की कटाई और खराब हुई भूमि को बहाल करने का वचन दिया गया। सरकारों, विकास एजेंसियों, समुदायों और व्यक्तियों किसी के द्वारा भी बहाली की पहल शुरू की जा सकती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पर्यावरण में बदलाव के कारण कई और विविध हैं, और विभिन्न पैमानों पर इसका प्रभाव हो रहा है।

कोरोना वायरस ने पर्यावरण को प्रभावित किया है। घातक कोरोना वायरस के वैश्विक प्रकोप ने मानव जीवन और दैनिक गतिविधियों को प्रभावित किया है लेकिन इसने वायु की गुणवत्ता में सुधार किया है और जल प्रदूषण को कम किया है। लॉकडाउन के तहत अधिकांश शहरों के साथ, कार्बन उत्सर्जन में उल्लेखनीय कमी आई है जिसने पारिस्थितिक तंत्र को बहाल कर दिया है लेकिन महामारी के दौरान कीटाणुनाशक, मास्क, दस्ताने जैसे चिकित्सा कचरे का निपटान और अनुपचारित कचरे का बोझ भी कई गुना बढ़ गया है। इसके अलावा जब स्थिति सामान्य हो जाएगी फिर से पूर्व की तरह पर्यावरण का क्षरण होना शुरू हो जाएगा। वर्तमान समय में वैश्विक पर्यावरणीय स्थिरता के लिए दीर्घकालिक लक्ष्य और रणनीतियों और नीतियों का उचित कार्यान्वयन करने की आवश्यकता है। ऐसे विकल्प तलाशना जो दीर्घकालीन और मददगार हों इसलिए एक वैश्विक मंच बनाया गया है जहाँ लोग सकारात्मक पर्यावरणीय क्रियाओं को एकत्र कर सकते हैं। हमें अभियानों में भाग लेना चाहिए और प्रदूषण के कारण होने वाली समस्याओं को मिटाने और पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के लिए एकजुट होना चाहिए। मुझे विश्वास है कि हम सब मिलकर बदलाव ला सकते हैं।

अंचल कार्यालय
दिल्ली–1

कार्टून कोना

प्रदीप राय, सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक

सुशील कुमार

अपनी हिंदी

तेजी से बदलते इस सूचना एवं प्रौद्योगिकी के युग ने भाषाओं को सीखने और उनके प्रयोग को अत्याधिक सरल बना दिया है। गूगल, माइक्रोसॉफ्ट जैसी दुनिया की कई दिग्गज आई. टी. कंपनियों ने हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं के बाजार को पहचान लिया है और वे अपनी प्रणालियों एवं सॉफ्टवेयरों में इन भाषाओं के लिए भी वह सभी सुविधाएं उपलब्ध करवा रहे हैं जो अंग्रेजी के लिए हैं। इन सुविधाओं में हिंदी यूनीकोड फॉन्ट की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। अंग्रेजी–हिंदी अनुवाद, फोनेटिक हिंदी टाइपिंग, वॉइस हिंदी टाइपिंग, लीला इत्यादि ऐसे बहुत से टूल उपलब्ध हो गए हैं जिनसे हिंदी का प्रयोग सभी के लिए आसान हो गया है चाहे वो किसी भी भाषा क्षेत्र से क्यों ना हो। अब आवश्यकता सिर्फ इस बात की है कि हम सब इनके माध्यम से अपने दैनिक कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को किस प्रकार बढ़ाएं।

हिंदी एक उदार भाषा है, जिसने अंग्रेजी और अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों को सहजता से अपनाया है, हिंदी की प्रवाहमयता उसे जीवंत बनाती है। अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द हिंदी में आकर ऐसे घुलमिल गए हैं कि कई बार तो यह जान पाना मुश्किल हो जाता है कि वह शब्द किस भाषा का है। यह एक रोचक तथ्य है कि अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के चार से पाँच हजार शब्द हिंदी में रच–बस गए हैं और अब ये हिंदी का ही अभिन्न अंग हो गए हैं। किसी भी देश की राजभाषा वह भाषा होती है जिस भाषा में उस देश का सरकारी कामकाज किया जाता है। इस दृष्टि से किसी भी देश की भाषा उस देश की संस्कृति का दर्पण होती है। देश के पूर्वी अंचल से पश्चिमी अंचल और उत्तरी अंचल से दक्षिणी अंचल कहीं भी किसी कोने में भी आप चले जाएं यदि आप हिंदी जानते और समझते हैं तो आपको किसी तरह की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। आज आप किसी भी उत्पाद अथवा सेवा को ही लें लें, विज्ञापन विक्रय की कला व जनसंचार का सबसे बड़ा माध्यम हिंदी है जिसके द्वारा उपभोक्ता को दृश्य और श्रव्य सूचना

इस उद्देश्य से परोसी जाती है कि वह विज्ञापनकर्ता की इच्छा से विचार तथा सहमति कार्य अथवा व्यवहार करने लगे।

संवाद के सशक्त माध्यम के रूप में हिंदी लगातार नए आयाम की ओर बढ़ रही है। सही मायने में हिंदी आज ऐसे मुकाम पर पहुँच चुकी है कि उसे नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। वर्तमान परिवेश में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ी है तथा हमारे प्रधानमंत्री जी ने भी संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अन्य अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अपना संबोधन हिंदी में देकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा के प्रयोग को एक नई ऊर्जा प्रदान की है। इससे विदेशों में बसे न केवल प्रवासी भारतीय हिंदी भाषा एवं भारत के प्रति सम्मोहित हो रहे हैं बल्कि वैश्विक स्तर पर हिंदी की स्वीकार्यता में भी वृद्धि हुई है।

हिंदी हमारी राजभाषा है और इसमें राजभाषा बनने के साथ–साथ राष्ट्रभाषा बनने की भी योग्यता है। भाषा किसी भी देश के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं को समझने का प्रभावी एवं सशक्त माध्यम होती है। भाषा देश संस्कृति एवं सभ्यता की संवाहक होती है। देश

के विभिन्न राज्यों के लोगों को एक सूत्र में पिरोने का काम हिंदी भाषा करती है। महात्मा गाँधी जी ने कहा था कि जो राष्ट्र अपनी भाषा में स्वयं को अभिव्यक्त नहीं करता वह राष्ट्र गूंगा है। विज्ञापनों, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन के मामले में हिंदी भाषा का अभी भी वर्चस्व है। इस तथ्य को हमें अपने बच्चों को मूल मंत्र के रूप में देना होगा कि हिंदी उनकी अपनी भाषा है एवं हिंदी बोलने से, हिंदी में पढ़ने से और हिंदी में लिखने से उन्हें हीन भावना से ग्रस्त होने की बजाय अपनी भाषा पर गौरवान्वित होना चाहिए। जहाँ तक उपभोक्ता वस्तुओं का सवाल है, विज्ञापनों के जरिए ग्राहकों के अवचेतन मन पर हिंदी ने अपनी पूरी छाप छोड़ दी है। आज आप देखेंगे कि कोई भी प्रॉडक्ट अपने कंज्यूमर तक तभी अपनी पहुँच बनाने में सफल हो सकता है जब वह अपने प्रॉडक्ट को उनकी भाषा में बेचे। दुनिया के किसी भी देश को भारत में अपने उत्पाद को बेचना है तो उसे बिना हिंदी के सोचना भी संभव नहीं होगा।

दूसरी ओर भारत सरकार की राजभाषा नीति भी प्रेरणा, प्रोत्साहन व पुरस्कार की है जिसे वर्तमान में सभी केंद्रीय संगठनों/उपक्रमों के कर्मियों ने अपनाकर अपनी सृजनात्मक प्रतिभा को निखारने का एक सशक्त माध्यम बना लिया है, यह राजभाषा के प्रचार–प्रसार को तीव्र गति प्रदान करता है। 'गृह पत्रिका' किसी भी संगठन/उपक्रम की रचनात्मक अभिव्यक्ति का मुखपत्र हुआ करती है। कार्यालय संबंधी दायित्वों के निर्वहन के साथ–साथ प्रत्येक कर्मी अपनी प्रतिभा की अभिव्यक्ति भी चाहता है। यह अकारण नहीं है कि पिछले वर्षों से लोगों के बीच सामाजिक माध्यमों– सोशल मीडिया के जरिए हिंदी की लोकप्रियता एवं स्वीकार्यता लगातार बढ़ रही है जिससे राजभाषा के कार्यान्वयन को गति प्राप्त हुई है। सभी केंद्रीय संगठनों/उपक्रमों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ाने हेतु भी यह एक उत्तम माध्यम सिद्ध हुआ है।

अंचल कार्यालय बठिंडा

देवेन्द्र कुमार

जरा सोचिए...?

टीवी देखते हुए घर पर साप्ताहिक अवकाश का आनंद ले रहा था। टेलीविजन में भी समाचार चैनल। एक प्रदेश के मुख्यमंत्री जो अच्छे वक्ता भी हैं, का साक्षात्कार टीवी पर आ रहा था। सामान्यतः इस प्रकार के वक्ताओं को सुनना मुझे बड़ा अच्छा लगता है। न्यूज चैनल का एंकर भी मुख्यमंत्री महोदय से तरह–तरह के सवाल कर रहा था कुछ राजनीति से संबंधित और कुछ व्यक्तिगत जीवन से, जिससे साक्षात्कार और चैनल के टीआरपी के मध्य सामंजस्य बन सके। इन सवालों के बीच न्यूज एंकर नें मुख्यमंत्री महोदय से पर्यावरण से संबंधित कुछ प्रश्न पूछे, मुख्यमंत्री जी ने भी अपने कार्यकाल के दौरान प्रदेश में पर्यावरण अनुकूल किए गए सभी कार्यों की जानकारी दी लेकिन ये सभी कार्य तो राज्य सरकार की ओर से किए गए कार्यों का ब्यौरा था। मुख्यमंत्री महोदय ने बताया कि सरकारी तंत्र से इतर उन्होंने व्यक्तिगत रूप से भी इस पुनीत कार्य में अपना योगदान दिया है, वे अपने जन्मदिवस पर एक पौधा अवश्य लगाते हैं। जन्मदिन मनाने का यह उनका अपना तरीका है और इससे मिलने वाली प्रसन्नता का अपना अलग अनुभव है।

लोगों के जन्मदिन मनाने के तरीके अलग–अलग हो सकते हैं कोई गरीबों में भोजन बांटता है तो कोई स्वजनों को खाने पर आमंत्रित करते हैं और कोई दान–दक्षिणा करके अपना जन्मदिन मनाते हैं लेकिन इस सब के साथ एक पौधा भी लगाया जाए तो जन्मदिन का उत्सव विशेष हो जाएगा। पर्यावरण को संरक्षित करने के साथ–साथ हम अप्रत्यक्ष रूप से जन सामान्य का भला कर पाएंगे।

आज जब पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ रहा है तो कहीं न कहीं यह वृक्षों की कटाई से प्रभावित है। मैंने यह सोच लिया है अगर मेरे निवास स्थान या इसके आसपास पौधा लगाने के लिए स्थान रिक्त है तो मैं अपने जन्मदिवस में पौधा लगाने का उत्सव अवश्य शामिल करूंगा। अब सोचने की बारी आपकी है, इस विषय पर जरा गंभीरता से सोचिए.....???

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग

सच्चे मित्र हीरे की तरह कीमती और दुर्लभ होते हैं, झूठे दोस्त पतझड़ की पत्तियों की तरह हर जगह मिलते हैं – अरस्तु

प्रतिज्ञा

राजीव बक्शी

अनुभव लुधियाना कृषि विश्वविद्यालय में एक स्टेनोग्राफर के तौर पर कार्यरत था। इस सम्मानीय विश्विद्यालय में काम करने के अलावा वो पिछले तीस वर्षों से अपने स्कूटर से दूध बाँटने का काम भी करता था। यह उसका पुश्तैनी व्यवसाय था और उसे इस काम में कोई शर्मिंदगी नही होती थी। चाहे लुधियाना का सराभा नगर हो या राजगुरु नगर, चाहे दिसम्बर की कड़कती सर्दी हो या जून की उमस भरी गर्मी वो अपने उपभोक्ताओं को कृतार्थ करने को हमेशा तत्पर रहता था। रोज सुबह ठीक सात बजे वो अपने दूध के कंटेनर के साथ हमारे घर पर पहुँच जाता था। मुख्य द्वार की घण्टी बजाता और अगर उसे कोई प्रतिक्रिया नही मिलती तो वह चुपचाप रसोईघर में जा कर बर्तन में दूध रखकर उसे एक साफ तश्तरी से ढंक देता। मैं पिछले तीस सालों से इस नियमित दिनचर्या को देखता आया हूँ। हमनें कई बार अपना निवासस्थान बदला, मगर हमारे दूधवाले से हमारा संपर्क हमेशा बना रहा।

एक शाम वो हमारे घर आया। उसने बताया कि वह आने वाले तीन दिन दूध देने नहीं आ सकेगा क्योंकि उसे जालंधर में एक करीबी रिश्तेदार की शादी में जाना है। तीन दिन बीत चुके थे पर अनुभव की कुछ खबर नहीं थी। दो दिन बाद मुझे उसका फोन आया। उसने बताया कि उसके 22 वर्षीय पुत्र और उसके तीन करीबी रिश्तेदार फगवाड़ा के समीप एक घातक दुर्घटना के शिकार हो गए हैं। वो तीनों इंजीनियरिंग के विद्यार्थी जिस कार में सफर कर रहे थे, बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई थी और उनकी चोट इतनी गहरी थी कि तीनों बच न सके। उनमें से एक कार चला रहा था। कार मुख्य जी टी रोड पर एक स्टेशनरी ट्रक से टकरा गई। अनुभव इस खबर से बिखर गया था। उसका इकलौता बेटा मारा गया था। उसकी पत्नी की बहन का पुत्र भी इस दुर्घटना में मारा गया था। राह चलते लोगों में से कोई भी घायलों को अस्पताल ले जाने के लिए आगे नहीं आया।

सारे राह चलते लोग घटनास्थल पर खड़े होकर ये चर्चा कर रहे थे कि क्या हुआ और किसकी गलती है। किसी ने भी इतनी हिम्मत नहीं दिखाई कि घायल बच्चों को अस्पताल पहुँचा दें। अनुभव यही सोचा करता कि अगर किसी ने वक्त रहते बच्चों को अस्पताल पहुँचा दिया होता तो उन्हें बचाया जा सकता था मगर ऐसा नही हुआ। अंतिम संस्कार के वक्त अनुभव ने अपने मन में ये प्रतिज्ञा ली कि अगर कभी उसके सामने कोई दुर्घटना घटित हुई तो वो कभी उस स्थान पर नहीं रुकेगा। जब किसी ने उसके दुःख में साथ नहीं दिया तो वो किसी का साथ क्यों दे? अनुभव ने इस घटना को एक कड़वी दवा की तरह निगल लिया और इसे अपनी किस्मत मानकर स्वीकार कर लिया।

इस घटना के तीन साल बीत चुके थे। अनुभव ने अपनी बेटी का विवाह कर दिया और पत्नी नीति के साथ एक संतुष्ट जीवन बिता रहा था। एक रोज सर्दी की सुबह थी और तेज बारिश हो रही थी। वह अपनी पत्नी नीति जो कि एक सरकारी अस्पताल में नर्स थी, उसे छोड़ने के लिए गया हुआ था। जब वह वापस घर लौट रहा था तो उसने पेट्रोल पंप के पास कुछ किशोर बच्चों का झुंड देखा जो अपने स्कूल का ब्लेजर पहने हुए थे। साथ ही कुछ राहगीर जो मजदूर थे और अपनी साईकल पर बैठे मजदूरी के लिए जा रहे थे। सड़क के उस पार एक स्कूटर गिरा हुआ था और पन्द्रह–सोलह साल के दो किशोर घायल अवस्था मे पड़े थे, उनका खून काफी तेजी से बह रहा था। देखने मे वो प्लस वन व प्लस टू के विद्यार्थी लग रहे थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उनके साथ कोई दुर्घटना हुई है।

अनुभव ने अपनी कार की गति तेज कर ली। वह उस वीभत्स स्थल पर ठहरना नहीं चाहता था। उसके पुत्र की मृत्यु का पूरा परिदृश्य उसकी आँखों के सामने घूम रहा था। इस पृथ्वी के किसी भी व्यक्ति ने उसके पुत्र की सहायता नहीं की थी तो वो बेवजह खुद को इस घटना का हिस्सा क्यों बनाये। उसे अपने उपभोक्ताओं को दूध बांटने जाना था। उसके बाद उसे 9 बजे तक अपने ऑफिस पहुँचना था।

अपनी कार से तेज गति से 500 मीटर की दूरी तय करने के बाद अचानक उसने कार वापस मोड़ ली और घटना स्थल पर पहुँच गया। उन दोनों बच्चों के सर से बहते खून में उसे अपने बेटे की साँसो की सुंगध महसूस हुई। राहगीरों ने तुरंत उन बच्चों को उसकी कार में रखा। उन बच्चों के पहचान–पत्र उनकी गर्दन में लटक रहे थे। अनुभव उन बच्चों को लुधियाना के डीएमसी अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में ले गया। अनुभव ने अस्पताल के कार्ड बनवाए और दवाइयों तथा टांके लगाने के लिये डॉक्टर की फीस भी चुकाई। इस घटना के दो घंटे बाद उसने तीन लोगों को तीव्रता से फोन किया। दो फोन अस्पताल के टेलीफोन बूथ से किये गए थे। बिना अपनी पहचान बताए उसने कशिश अरोरा और सुनील सिंह के परिवार को खबर की कि उनके बच्चों के साथ दुर्घटना हो गयी है और अब वो लोग खतरे से बाहर है व अस्पताल से डिस्चार्ज करने की स्थिति में हैं।

तीसरा फोन अनुभव ने अपनी पत्नी नीति के मोबाइल पर लगाया। आँखो से बेतहाशा बहते हुए आँसुओ के साथ उसने भारी आवाज में अपनी पत्नी को उस दुर्घटना के बारे में बताया और साथ ही ये भी बताया कि किस तरह उसने अपनी वो प्रतिज्ञा तोड़ दी कि वो कभी किसी भी घायल व्यक्ति की सहायता नहीं करेगा। कुछ ही देर में कशिश अरोड़ा और सुनील सिंह के माता–पिता डीएमसी अस्पताल पहुँच गए। मगर वो दयालु हृदय व्यक्ति अपना नाम और मोबाइल नंबर बताए बगैर वहाँ से जा चुका था। इस दुःखद घटना के बारे में जानकर एक जोड़ा बहुत खुश था और वो जोड़ा था नीति और अभिनव का, जिसने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ी थी। नीति को अपने पति पर बहुत गर्व हो रहा था। भले ही उसने अपना बेटा खोया था मगर उसके पति ने दो अनजान बच्चों की जिंदगी बचाई थी। अनुभव की विवाहित पुत्री विभा इस बात से बहुत खुश थी कि भले ही वो अपने भाई को कभी राखी नहीं बांध पाएगी मगर कशिश अरोरा और सुनील सिंह के परिवार में ये पवित्र धागा बांधने की रीति जारी रहेगी।

सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रबंधक

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

प्रतिवर्ष 21 जून को मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पहली बार वर्ष 2015 में मनाया गया जिसकी पहल भारत द्वारा की गई थी। वर्ष 2014 में भारतीय प्रधानमंत्री ने संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित अपने वक्तव्य में योग की महत्ता प्रतिपादित करते हुए कहा था "योग भारत की प्राचीन परम्परा का एक अमूल्य उपहार है यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है। मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है। विचार, संयम और पूर्ति प्रदान करने वाला है तथा स्वास्थ्य और भलाई के लिए एक समग्र दृष्टिकोण को भी प्रदान करने वाला है। यह व्यायाम के बारे में नहीं है लेकिन अपने भीतर एकता की भावना, दुनिया और प्रकृति की खोज के विषय में है। हमारी बदलती जीवन– शैली में यह चेतना बनकर, हमें जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद कर सकता है। तो आइए एक अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को गोद लेने की दिशा में काम करते हैं।" इसके बाद संयुक्त राष्ट्र संघ ने प्रतिवर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने के प्रस्ताव को रिकार्ड 90 दिन से भी कम समय में पूर्ण बहुमत से पारित किया।

21 जून – अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस
योगः संभावनाओं को संभव बनाएं

स्थापना दिवस कार्यक्रम 2021

काव्य–मंजूषा

चलो नए सूरज को खोजते है

मीनाक्षी शर्मा

कल के अंधेरो से निकल कर,
उजालों की ओर चलते है....
चलो नए सूरज को खोजते है ।
कल तक थी..... उदासी, लाचारी,
चलो आज नई आशाओं को खोजते है ।
बहुत देख लिए... ढलते सूरज
अब अपना नया सवेरा... देखते है ।
पुरानी जजीरों को तोड़ कर,
आसमान को छू लेने का, सपना देखा था,
आज उसी सपने को खुली आखों से देखते है।
हौसला बड़ा करके, कुछ नया करने का दम भर लेते हैं...
चलो आज खुद की ही उम्मीदों से बड़ा, कुछ ऐसा कर लेते है ।
आज अंधेरो से निकल कर, उजालों की ओर चलते है,
चलो नए सूरज को खोजते है...

शाखा–बडौदा, गुजरात

शिकवे तो तुझसे हैं बहुत ऐ जिंदगी

विपिन कुमार

शिकवे तो तुझसे हैं बहुत ऐ जिंदगी,
मगर शिकायतें भी करूँ, तो किससे करूं,
हैं मन में मेरी उलझने बहुत,
मगर इनायत भी करूँ,तो किससे करूं।

सोचता था कि चलता रहेगा यूँ ही,
मेरा सफर–ए–जिंदगी य
मगर तूफान इंतजार में ही था शायद,
और कबूल ना हुई मेरी बंदगी।

माना कि दर्द जीवन की परछाई है,
मगर उस दर्द की दवा ना मिली मुझेय
और दवा जो मिली तो शिफा न मिला ,
अब हर कदम एक अजीब सी तन्हाई है।

मेरे अनसुलझे सवाल, तुझ से कैसे पूछूं या रब,
वो हंसकर बोला,
गिला शिकवा न कर बंदेय
मेरी लिखी अधूरी कहानी का रचा खेल है ये सब।

प्रधान कार्यालय, मा.सं.वि. विभाग

"मैं खुदगर्ज हूँ"

जब किसी ने मुझे खुदगर्ज कहा
तब मुझे फिर से ये एहसास हुआ कि मैंने खुद को खोया नहीं है।
ये तोहमत कि मैं खुदगर्ज हूँ मुझमें नई जिन्दगी का संचार कर गई।
जाने क्यों खुदगर्जी को बुरा मानते हैं लोग?
मुझे तो लगा जैसे मन का कोई बोझ हट गया

क्या गलत किया जो मैंने अपने बारे में सोचा?
एक जमाना गुजर गया था खुदगर्जी किए हुए
पहली खुदगर्जी तब की थी जब
सबके न चाहते हुए भी इस दुनिया में आई थी।
बचपन में खुदगर्ज ख्वाहिश ही थी
जो मुझे औरों से आगे ले आई थी।
अगर मैं खुदगर्ज न होती तो आज
मैं भी पर्दे में दबी–सकुचाई सी जी रही होती।

ये मेरी खुदगर्जी ही थी जो मैनें
भाई की फटी किताबें पढ़ी थी।
ये मेरी खुदगर्जी ही थी जो मैंने
चोरी–चुपके उसकी साइकिल चलाई थी।
पर जैसे–जैसे मैं बड़ी होती गई
मेरी खुदगर्जी कम होती गई।
माँ ने कहा लड़कियाँ खुदगर्ज नहीं होती,
उन्हें खुद को भूल जाना होता है।
लड़की हो तुम, सिर्फ बेटी, बहन, बीबी और माँ हो तुम।

पर मैं तो खुदगर्ज थी,
इससे ज्यादा की चाहत थी मुझे अपने लिए।
अपना आसमान ढूंढना था,
जाना था सात समंदर पार।
नहीं सहना था किसी का अन्याय,
नहीं होना था अत्याचार का शिकार।
इसलिए मैं एक बार फिर खुदगर्ज बन गई।
मैं खुदगर्ज हूँ क्योंकि मैं अपने बारे में सोचती हूँ।

किरण बुनकर
आँचलिक कार्यालय, देहरादून

अच्छे विचारों पर यदि अमल न किया जाये तो वे अच्छे स्वप्नों से बढ़कर नहीं हैं – एमरसन

यह इत्तेफाक नहीं है

राहुल रंजन

प्रस्फुटन की शिराओं में इत्तेफाक से,
गिर गया फिर एक पत्ता शाख से।

आकाश में उड़ती तितलियों ने
मकरंद–पुष्प को न पहचाना
स्वपराग की चाह में पंखुड़ियां
भूल गई भ्रमर को रिझाना
डर गई आस्था विश्वासघात से,
गिर गया फिर एक पत्ता शाख से।

मेहंदी लगाती है सरगम
इंद्रधनु के सतरंगी हाथ में
अस्फुट स्वर गाती है हिना
रंग–राग–रागिनी के साथ में
दिशि–दिशाएं भटकी अपने सिरात से,
गिर गया फिर एक पत्ता शाख से।

जल को तरसती धरा अंगड़ाई
अधखिले धूप की छांव में
आकार बदलते यायावरी टुकड़े
विस्तृत नील–गगन–गांव में
उपवन चहका अभ्र–अभिलाप से,
गिर गया फिर एक पत्ता शाख से।

अपनी महक खोजती हैं फिजाएं
रवि–रश्मियों का चिराग लिए
राहें निकली मंजिल तलाशने
एक अदम्य दिव्य उत्साह लिए
जीतेगा जरूर यह जज्बा कायनात से,
शायद अब पत्ता नहीं गिरेगा शाख से।

आंचलिक कार्यालय होशियारपुर

'खरीद'

सुभाष चन्द्र शर्मा

'रुई का गद्दा बेच कर
मैंने इक दरी खरीद ली,
ख्वाहिशों को कुछ कम किया मैंने
'और खुशी खरीद ली'।

सबने खरीदा सोना
मैने इक सुई खरीद ली,
सपनो को बुनने जितनी
'डोरी ख़रीद ली'।

मेरी एक खवाहिश मुझसे
मेरे दोस्त ने खरीद ली,
फिर उसकी हंसी से मैंने
'अपनी कुछ और खुशी खरीद ली'।

इस जमाने से सौदा कर
एक जिन्दगी खरीद ली,
दिनों को बेचा और
'शामें खरीद ली'।

शौक–ए–जिन्दगी कमतर से
और कुछ कम किये,
फिर सस्ते में ही
''सुकून–ए–जिंदगी'' खरीद ली'।

अंचल कार्यालय नोएडा

रूप कुमार

गुस्सा नियंत्रण चाबी

अरे प्रिया बेटा रुक जा! ये क्या कर रही है? कार से दूर हट जा। रमन ने देखा कि उसकी नन्हीं सी बच्ची हाथ में पत्थर का टुकड़ा लिए कार पर कुछ लिख रही है तभी वह दौड़ते हुए आया और बच्ची के हाथ में से वह पत्थर का टुकड़ा फेंककर बच्ची को बहुत डांटा और गुस्से में उसे एक थप्पड़ भी मार दिया जिसको वह सहन न कर सकी और झटके से जमीन पर जा गिरी जहाँ उसका सिर जमीन पर पड़ी ईंट से टकरा गया और सिर से खून निकलने लगा। जब रमन ने अपनी बच्ची के सिर से खून निकलते देखा तो उसे बहुत पछतावा हुआ और सोचने लगा कि उसने यह थप्पड़ क्यों मारा? तभी रमन उसी कार में बच्ची को डॉक्टर के पास ले गया। सिर में चोट ज्यादा थी जिसकी बजह से टाँके लगाने पड़ गए थे। दरअसल बात यह थी कि कुछ समय पहले ही रमन ने नई कार खरीदी थी। वह रोज उस कार को गार्डन के पास खड़ी किया करता था जहाँ छोटे–छोटे नन्हे बच्चे रोज खेलने आया करते थे। उन बच्चों के साथ रमन की बच्ची जिसका नाम प्रिया था वह भी खेला करती थी। गार्डन रमन के घर के बिल्कुल नजदीक ही था। एक दिन प्रिया उस कार के पास आई और बगल में पड़े छोटे से पत्थर के टुकड़े को उठाया और कार पर कुछ लिखने लगी। आखिर बच्चों में लिखने की उत्सुकता जो होती है। कभी दीवार पर लिखते हैं तो कभी खाली कॉपी के पृष्ठों पर भी लिख डालते हैं। यही हाल प्रिया का भी था। उसे लिखते हुए रमन ने देख लिया और अपनी नई कार पर खरोंच न आ जाएं इसलिए वह कार की तरफ दौड़ा और प्रिया के हाथ से वह पत्थर छीनकर दूर फेंक दिया और गुस्से में उसे थप्पड़ भी मार दिया।

डॉक्टर के पास से आने पर रमन ने सोचा कि आखिर प्रिया उस नई कार पर लिख क्या रही थी। कहीं कार पर ज्यादा खरोंच तो नहीं आ गई। उत्सुकतापूर्वक वह कार के पास गया और देखा, उस पर प्रिया ने लिखा था– ''आई लव यू पाप'' दरअसल हुआ ये कि जब प्रिया आखिर में लिख रही थी तभी रमन आ गया और

उसने प्रिया के हाथों से वह पत्थर फेंक दिया। इसलिए वह ''पापा'' नहीं लिख सकी। यह पढ़कर रमन की आँखों में आँसू आ गए। वह दौड़कर अपनी बच्ची के पास गया और उसे गोद में उठाकर कहा– सॉरी बेटा, मैंने तुम्हें थप्पड़ मारा, मैं बहुत गंदा हूँ ना?..। प्रिया ने हँसते हुए कहा– नहीं पापा, आप तो बहुत अच्छे हो। मैं आपसे बहुत प्यार करती हूँ। पापा मैं अब आगे से कभी कार पर नहीं लिखूँगी।

अब आप सोचिए कि उस समय रमन को कितना दुःख हुआ होगा और जब भी रमन प्रिया के सिर पर उस चोट के टांकों के निशान को देखेगा तो उसे आजीवन दुःख होगा और वह सोचेगा कि 'काश उस समय उसने गुस्सा न किया होता...'। अगर कार पर लिखा वह पहले देख लेता तो उसे शायद बहुत खुशी हुई होती। लोग तो अपनी कारों को सजाने के लिए स्टीकर लगाते हैं, डिजाइनिंग करवाते हैं। तब तो वह ''आई लव यू पापा'' दुनिया का सबसे प्यारा स्टीकर होता। चाहे जितनी नई कार हो लेकिन वह बहुत ही प्यारा लगता।

हमारा कोई समाज नहीं होगा अगर हम पर्यावरण को नष्ट करते हैं – मार्गरिट मीड

तो देखा आपने कैसे एक छोटे से गुस्से से बात बिगड़ गई। ऐसा हम लोगों के जीवन में भी होता है। अब मैं आपको कुछ ऐसे टिप्स बताने जा रहा हूँ जिनको अपनाकर आप अपने गुस्से को काफी हद तक नियंत्रित कर सकते हैं। पहला यह कि आपने गिनती गिनने के बारे में तो सुना ही होगा कि जब गुस्सा आए तो गिनती गिनना शुरू कर दो। इससे होता यह है कि हमारा दिमाग डाइवर्ट हो जाता है और फिर हम गुस्सा नहीं करते हैं। दूसरी बात यह कि हमें मृदुभाषी बनना चाहिए। हमें आहिस्ता बोलना चाहिए, तेज नहीं बोलना चाहिए। जब इसे हम अपनी आदत में ले आएंगे तो एक समय ऐसा आएगा कि हमें तेज आवाज में व चींखकर बात करना पसंद ही नहीं होगा और न ही तेज आवाज में सुनना पसंद आएगा। एक बात यह भी है कि अक्सर कुछ लोग गुस्से में बहुत कुछ बड़बड़ा देते हैं, सामने वाले पर हाथ उठा देते हैं। घर में माँ–बेटे, भाई–बहिन, पति–पत्नी में अक्सर ऐसी लड़ाइयां हो जाती हैं। अब एक बात सोचिए ऐसी लड़ाई कितनी देर होती हैं। मान लीजिए ऐसी लड़ाई रोज 1घंटे होती है। उसके बाद 23 घंटे तो हम आराम से रह रहे होते हैं ना। ये हमारी अच्छी आदते हैं। जब हमारी लड़ाई होती है या फिर हमें गुस्सा आता है तो क्यों न हम उसकी अच्छी चीजों के बारे में सोचें। मान लो पत्नी ने एक दिन खाने में नमक ज्यादा डाल दिया तो गुस्सा करने की बजाय अगर हम यह सोचें कि बाकी सभी दिन तो यह खाना अच्छा बनाती है। अगर एक दिन नमक ज्यादा हो गया तो क्या हुआ। हो गया होगा, ये भी तो इंसान है और इंसानों से गलती होना तो स्वाभाविक है। गलतियाँ तो हम सभी से होती हैं। इसलिए सबसे पहले तो हमें अपने अच्छे लम्हों को याद करना चाहिए। इससे उस व्यक्ति के प्रति गुस्सा उसी समय गायब हो जाएगा। इसके अलावा माफ करना सीखें। उदारता सबसे बड़ी चीज है। हम जितने उदार होंगे उतने ही शांत होते चले जाएंगे। यदि आपने माफ करना सीख लिया तो इससे होगा ये कि एक तो आपका दिल हल्का हो जाएगा दूसरा ये कि सामने वाला भी सोचेगा कि आप कितने अच्छे व्यक्ति हैं। उसने गलती की और आपने उसे माफ कर दिया। अगर आपको गुस्सा आ रहा है और आपका चिल्लाने का मन कर रहा है तो आप खाली जगह चले जाइए, खूब चिल्ला लीजिए, खूब बड़बड़ा लीजिए, जितनी बातें बोलनी हैं सब बोल डालिए। इससे होगा ये कि एक तो आपका गुस्सा बाहर आएगा और धीरे–धीरे आपका गुस्सा शांत भी हो जाएगा। जब आपका गुस्सा शांत हो जाएगा तो आप खुद ही सोचेंगे कि ये मैं क्या बड़बड़ा रहा हूँ। गुस्सा आने पर आप अपना माइंड डाइवर्ट करने के लिए मूवी देख सकते हैं, बाहर घूमने जा सकते हैं, पार्टी आदि इस प्रकार की कुछ भी चीजें कर सकते हैं। इससे आपका गुस्सा जरूर शांत हो जाएगा। खासकर

बीड़ी, सिगरेट, शराब, तम्बाकू इत्यादि का सेबन करने वालों को गुस्सा जल्दी आता है क्योंकि ये चीजें व्यक्ति के ब्लड–प्रेशर को बढ़ा देती हैं। इसलिए ऐसी चीजों से बचना चाहिए। ये चीजे व्यक्ति के स्वास्थ्य को खराब करती हैं, पैसा बर्बाद होता है, गुस्सा आता है। अब बहुत से लोग यह भी सोचते हैं कि मैं इन चीजों को लेना तो नहीं चाहता, छोड़ना चाहता हूँ लेकिन आदत सी पड़ गई है जो छूटती ही नहीं है। अरे भाई जरा एक बात बताइए जब हम ऐसी आदतें डाल सकते हैं तो छोड़ क्यों नहीं सकते। ये आदत डाली भी तो हमने ही हैं। यदि आपके अन्दर दृढ़–इच्छाशक्ति है तो निश्चित ही आप ऐसी आदतों को छोड़ देंगे।

अब मैं आपको एक मजेदार बात बताता हूँ ये तो मैंने आपको बहुत सारी ऐसी बातें बता दी हैं कि कैसे आप अपना गुस्सा नियंत्रित कर सकते हैं। अब मजेदार बात यह है कि ''हमें और आपको गुस्सा आता ही नहीं हैं।'' अब आप सोच रहे होंगे कि ऐसा कैसे हो सकता है। हम तो रोज गुस्सा करते हैं। तो आइए इस पर विस्तार से चर्चा करते हैं। अब आप एक बात सोचिए– जब हम ऑफिस में होते हैं। तब कई बार बॉस गुस्से में होते हैं और हमारा काम सही होने पर भी वह हमें डांटने लगते हैं। बहुत चिल्लाते हैं। कभी–कभी सबके सामने डांटने लगते हैं। उस समय हमारा रिएक्शन क्या होता है। हमें पता होता है कि हम गलत नहीं हैं लेकिन उस समय जब बॉस चिल्ला रहा होता है तो हम सिर नीचे करके कहते हैं– ''यस सर! सॉरी सर! सर आगे से ऐसा नहीं होगा!.....'' ऐसा ही कुछ होता है ना? शायद आपने ऐसा कुछ फेश भी किया होगा। हमारी

गलती न होने पर भी हम ऐसा क्यों कहते हैं? क्यों ऐसा करते हैं?. ... क्योंकि हमें मालूम होता है कि यदि हमने वहाँ चिल्ला दिया या कुछ कह दिया तो हमें वहाँ से तुरंत निकाल दिया जाएगा क्योंकि हमें वहां से पैसे जो मिलने होते हैं। लोगों की कमी नहीं है और हमारी जगह किसी और को रख लिया जाएगा फिर हमारा घर कैसे चलेगा। बच्चों की फीस आदि कैसे भरेंगे। हमारे शौक कैसे पूरे होंगे इत्यादि। इस प्रकार हमने क्या किया। हम बॉस पर नहीं चिल्लाए और सोचने लगे कि बॉस का तो रोज–रोज का यही काम है। ये तो ऐसे ही चिल्लाते हैं। हम अपने–आप को इस तरह से समझा लेते हैं। अब क्या होता है कि वही व्यक्ति घर आया और टीवी देखने लग गया। उसी समय उसका कोई बच्चा रो रहा है या फिर दो बच्चे आपस में लड़ाई कर रहे हैं या पत्नी ने कुछ कहा या मम्मी–पापा ने कुछ बोला तब उसका रिएक्शन गुस्से में कुछ इस प्रकार होता है– ''तुम लोग लड़ाई क्यों कर रहे हो? चुपचाप नहीं बैठ सकते हो, शांत रहो!'' या फिर पत्नी से कहेगा– ''जब मैं ऑफिस से आता हूँ तो तुम बोला मत करो, इतना काम करके आता हूँ। थका–हारा आता हूँ।'' तो इस प्रकार की कुछ चीजे हमारे साथ होती हैं। कभी–कभी तो कुछ लोग अपने बच्चों पर हाथ भी उठा देते हैं, उन्हें मारते हैं और चिल्लाते भी हैं। अब आप सोचिए कि उस समय बच्चों की कोई गलती नहीं होती है। बच्चे तो अपना खेल रहे होते हैं। पत्नी की भी कोई गलती नहीं होती है। पूरे दिन की बातें वो भी अपना शेयर करना चाहती है। माँ–बाप भी अपने मन की बात कहना चाहते हैं। लेकिन इस समय हम गुस्सा कर जाते हैं। अब आप ही बताइए कि एक ही इंसान जब वही ऑफिस में होता है और उसकी गलती न होने पर भी उसने सामने वाले का गुस्सा झेल लिया वहीं घर पर वह गलती न होने पर भी दूसरे व्यक्ति को डांट रहा है। इससे क्या स्पष्ट होता है? यह कि हमें गुस्सा आता नहीं है, हम जानबूझकर गुस्सा करते हैं। जहाँ हमें पता होता है कि वहाँ गुस्सा करने पर हमारा नुकसान हो जाएगा वहाँ हम गुस्सा नहीं करते हैं और जब हमें पता होता है कि यहाँ गुस्सा करने पर हमें कोई नुकसान नहीं होना है, बच्चे को मार भी दिया तो कौन सा छोड़ कर चला जाएगा या बीबी को मार भी दिया तो कौन सी छोड़ कर चली जाएगी...हमें पता होता है कि यहाँ हमारा कोई नुकसान नहीं होना है तब हम यहाँ गुस्सा करते हैं। ये कोई फोन का बिल नहीं है या फिर कोई लाइट का बिल नहीं है जहाँ हमें गुस्सा आ जाएगा। गुस्सा हम करते हैं और अपनी मर्जी से करते हैं। सोच समझकर करते हैं।

अब आप समझ ही गए होंगे कि जब हम गुस्सा खुद से करते हैं तो नियंत्रण करना भी किसके हाथ में होगा? हमारे हाथ में ना... गुस्से को नियंत्रण करना भी हमारे ही हाथ में है। यह सुनकर कुछ तो खुशी आपको जरूर हुई होगी। अब गुस्से को कंट्रोल करना आपके लिए आसान हो जाएगा क्योंकि गुस्से को कंट्रोल करने की चाबी तो आपके ही हाथों में है। ये सारी चीजें अपनाइए और गुस्से को दूर भगाइए।

राजभाषा अधिकारी
पंजाब एण्ड सिंध बैंक, अंचल गुरुग्राम

यह भी जानें : अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

लोगों को अपने मातृभाषा के प्रति जागरूक करने तथा बहुभाषिकता, भाषाई संस्कृति व विविधता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पूरे विश्व में 21 फरवरी को "अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस" मनाया जाता है। स्थानीय, क्रॉस–बॉर्डर भाषाएं शांतिपूर्ण संवाद को बढ़ाने और स्वदेशी विरासत को संरक्षित करने में सहायक होती हैं।

इस दिवस की पृष्ठभूमि का श्रेय बांग्लादेश के ऐतिहासिक भाषाई आंदोलन को दिया जाता है। बांग्लादेश में इस दिन राष्ट्रीय अवकाश होता है। सन 1952 में ढाका विश्वविद्यालय के छात्रों और कतिपय सामाजिक कार्यकर्ताओं ने अपनी मातृभाषा का अस्तित्व बनाए रखने के लिए एक विरोध प्रदर्शन किया लेकिन पाकिस्तान प्रशासन की पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर गोलियाँ चलवा दी जिसमें 16 लोगों की जान चली गई। भाषा के इस आंदोलन में शहीद होने वालों की स्मृति में यूनेस्को ने वर्ष 1999 से अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाने की घोषणा की थी।

अगर कोई तरीका दूसरे तरीके से बेहतर है तो आप निश्चित रूप से कह सकते हैं कि वो प्रकृति का तरीका है – अरस्तु

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਦਾ ਜੀਵਨ ਅਤੇ ਉਪਦੇਸ਼

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਦੀ ਪੰਜਵੀਂ ਜੋਤ ਸਾਹਿਬ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਦੇ ਆਦਰਸ਼ਾਂ ਅਨੁਸਾਰ ਸਿੱਖ ਮਤ ਦੀ ਨੀਂਹ ਉਪਰ ਉੱਚ-ਵਿਚਾਰਾਂ ਅਤੇ ਸਿਧਾਂਤਾਂ ਦੀ ਇਮਾਰਤ ਖੜੀ ਕੀਤੀ ਅਤੇ ਇਸ ਦੀ ਰਾਖੀ ਲਈ ਅਪਣਾ ਆਪ ਵੀ ਕੁਰਬਾਨ ਕਰ ਦਿੱਤਾ। ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਧਰਮ ਦੀ ਨੀਂਹ ਨੂੰ ਮਜਬੂਤੀ ਦੇਣ ਅਤੇ ਸਮਾਜ ਦੇ ਬੁਨਿਆਦੀ ਸਿਧਾਂਤਾਂ .ਖਾਤਰ ਅਪਣੀ ਕੁਰਬਾਨੀ ਦੇ ਕੇ ਸਿੱਧ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਕਿ ਕੋਈ ਵੀ ਧਰਮ ਜਾ ਦੇਸ਼ ਵਡੀਆਂ ਇਮਾਰਤਾਂ ਨਾਲ ਨਹੀਂ ਉਸਰਦਾ ਸਗੋਂ ਵਡੀਆਂ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਨਾਲ ਹੀ ਸਦਾ-ਸਦਾ ਲਈ ਕਾਇਮ ਰਹਿ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਗੁਰ-ਗੱਦੀ ਤੇ ਬਿਰਾਜਮਾਨ ਹੋ ਕੇ ਗੁਰੂ-ਧਰਮ, ਗੁਰੂ-ਸ਼ਕਤੀ, ਗੁਰੂ-ਲਹਿਰ ਅਤੇ ਗੁਰੂ-ਸੰਸਥਾ ਨੂੰ ਸਥਾਪਿਤ ਅਤੇ ਉਜਾਗਰ ਕਰਨ ਲਈ ਜੋ ਯੋਗ ਅਗਵਾਈ ਦਿੱਤੀ ਅਤੇ ਜਿਹੜੀਆਂ ਯੋਜਨਾਵਾਂ ਬਣਾਈਆਂ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਅਧਿਆਤਮਕ ਅਤੇ ਆਦਰਸ਼ਕ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਸਫਲਤਾ ਨਾਲ ਸਿਰਜਿਆ, ਉਸਦਾ ਸਿਰਫ ਇਤਿਹਾਸਕ ਗੌਰਵ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਅਧਿਆਤਮਕ ਜਗਤ ਵਿੱਚ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾ ਤੇ ਵਿਲੱਖਣਤਾ ਦਾ ਪ੍ਰਗਟਾਵਾ ਵੀ ਹੋਇਆ ਹੈ।

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਚੌਥੇ ਗੁਰੂ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਾਮਦਾਸ ਜੀ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਛੋਟੇ ਸਪੁੱਤਰ ਸਨ। ਵਡਾ ਭਰਾ ਪ੍ਰਿਥੀ ਚੰਦ ਆਪਜੀ ਨਾਲ ਈਰਖਾਂ ਕਰਦਾ ਸੀ ਕਿਉਂਕਿ ਆਪ ਵਧੇਰੇ ਪ੍ਰਤਿਭਾਸ਼ਾਲੀ ਤੇ ਦੂਰਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਰਖਦੇ ਸਨ। ਆਪਨੂੰ ਪਿਤਾ ਤੋਂ ਦੂਰ ਰਖਣ ਲਈ ਹਰ ਸਮੇਂ ਕੋਈ ਨਾ ਕੋਈ ਵਿਉਂਤ ਬਣਾਂਦਾ ਰਹਿੰਦਾ ਸੀ। ਇਕ ਵਾਰ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਨੂੰ ਲਾਹੋਰ ਤੋਂ ਚਿੱਠੀਆਂ ਲਿਖੀਆਂ ਸਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਤੀ ਪ੍ਰੇਮ ਅਤੇ ਮਿਲਣ ਦੀ ਲਾਲਸਾ ਨੂੰ ਅਦੁਤੀ ਰਸ ਤੇ ਰੰਗ ਨਾਲ ਅਪਣੇ ਮਨ ਦੇ ਵਲਵਲੇ ਪ੍ਰਗਟਾਏ ਸਨ। ਪ੍ਰਿਥੀ ਚੰਦ ਨੇ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇ ਜੀ ਦੁਆਰਾ ਭੇਜੀਆਂ ਇਹ ਤਿੰਨੇ ਚਿੱਠੀਆਂ ਛੁਪਾ ਲਈਆਂ। ਪਿਤਾ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਾਮਦਾਸ ਜੀ ਨੂੰ ਜਦੋਂ ਚਿੱਠੀ ਤੇ ਪਏ ਅੰਕ ਤੋਂ ਪਹਿਲੀਆਂ ਚਿਠੀਆਂ ਬਾਰੇ ਪਤਾ ਚਲਿਆ ਤਾਂ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਦੋਹਾਂ ਨੂੰ ਇਕ ਚਿੱਠੀ ਹੋਰ ਲਿਖਣ ਲਈ ਕਿਹਾ। ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਦੀ ਲਿਖੀ ਇਸ ਚਿੱਠੀ ਵਿੱਚ ਪਹਿਲਾਂ ਦੀਆਂ ਤਿੰਨੇ ਚਿੱਠੀਆਂ ਵਰਗੇ ਕਾਵਿਕ ਗੁਣ ਅਤੇ ਅਲੌਕਿਕ ਭਾਵਨਾਵਾਂ ਸਨ।

ਪਹਿਲੀਆ ਤਿੰਨੇ ਚਿੱਠੀਆਂ ਵਿੱਚ ਜਿੱਥੇ ਗੁਰੂ ਪਿਤਾ ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਦੀ ਸਿੱਕ ਅਤੇ ਬਿਹਬਲਤਾ ਦਾ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਚਿੱਤ੍ਰ ਦੇਖਣ ਨੂੰ ਮਿਲਦਾ ਹੈ ਓਥੇ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇ ਜੀ ਦੀ ਲਿਖੀ ਚੌਥੀ ਚਿੱਠੀ ਵਿੱਚ ਪਿਤਾ-ਮਿਲਾਪ ਦੇ ਬੇਮਿਸਾਲ ਵਰਣਨ ਸਹਿਜਤਾ ਅਤੇ ਗਰੂ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਤੀ ਦਰਸ਼ਨ ਦੀ ਲੋਚਾ ਅਤੇ ਗੁਰੂ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਤੀ ਸਮਰਪਣ ਦਾ ਭਾਵ ਦੇਖਣ ਨੂੰ ਮਿਲਦਾ ਹੈ :

ਭਾਗ ਹੋਆ ਗੁਰਿ ਸੰਤੁ ਮਿਲਾਇਆ॥

ਪ੍ਰਭੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ਘਰ ਮਹਿ ਪਾਇਆ

ਸੇਵ ਕਰੀ ਪਲੁ ਚਸਾ ਨਾ ਵਿਛੁੜਾ

ਜਨ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤੁਮਾਰੇ ਜੀਓ॥4॥

ਹਉ ਘੋਲੀ ਜੀਉ ਘੋਲਿ ਘੁਮਾਈ

ਜਨ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤੁਮਾਰੇ ਜੀਓ॥

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਸਾਹਿਬ ਦਾ ਜੀਵਨ ਸੱਚ, ਸਿਮਰਨ, ਸੇਵਾ, ਸਹਿਜ ਅਤੇ ਗੁਰੂ ਪ੍ਰਤੀ ਸਮਰਪਿਤ ਕਮਾਈ ਵਾਲਾ ਸੀ। ਆਪ ਗੁਰਮਤ ਬ੍ਰਹਮ ਅਤੇ ਗੁਰਮਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਨਾਲ ਓਤ-ਪ੍ਰੋਤ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਆਤਮਕ ਮੰਡਲ ਦੇ ਰਸ ਤੇ ਅਨੰਦ ਨਾਲ ਭਿਜੇ ਕੂੜ-ਕ੍ਰਿਆ, ਵੈਰ-ਵਿਰੋਧ, ਲੋਭ-ਮੋਹ, ਹਉਮੈ-ਹੰਕਾਰ ਦੀ ਬਿਰਤੀ ਦੀ ਪਕੜ ਤੋਂ ਉਪਰ ਸਨ। ਇਹੀ ਕਾਰਣ ਸੀ ਕਿ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਾਮਦਾਸ ਜੀ ਨੇ ਆਪਦੀ ਜੀਵਨ-ਸ਼ੈਲੀ, ਜੀਵਨ-ਜਾਚ ਅਤੇ ਉਚੀਆਂ ਆਤਮਕ ਉਡਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਵੇਖਦੇ ਹੋਏ ਆਪਣੀ ਜਾਗਤ-ਜੋਤ ਅਧਿਆਤਮਕ ਜੁਗਤ ਰਾਹੀਂ ਆਪ ਵਿੱਚ ਟਿਕਾਣ ਦਾ ਨਿਰਣਾ ਲਿਆ।

ਗੁਰੂ ਘਰ ਦੇ ਜੱਸ ਵਿੱਚ ਰੰਗੇ ਸਮਕਾਲੀ ਭਟਾਂ ਨੇ ਇਸ ਸੰਬੰਧ ਵਿੱਚ ਗੁਰੂ ਧਰਮ, ਗੁਰੂ ਸ਼ਕਤੀ, ਗੁਰੂ ਲਹਿਰ ਅਤੇ ਗੁਰੂ ਸੰਸਥਾ ਦਾ ਵਰਨਣ ਕੁੱਝ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕੀਤਾ ਹੈ:

*ਰਾਮਦਾਸਿ ਗੁਰੂ ਜਗ ਤਾਰਨ ਕਉ ਗੁਰੂ ਜੋਤਿ ਅਰਜਨੁ ਮਾਹਿ ਧਰੀ॥

*ਭਨਿ ਮਥਰਾ ਕਛੁ ਭੇਦ ਨਹੀਂ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨੁ ਪਰਤਖ ਹਰਿ॥

*ਛੱਤ੍ਰ ਸਿੰਘਾਸਨ ਪਿਰਥਮੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਕਉ ਦੇ ਆਇਅਉ॥

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਗੁਰੂ ਸਿੰਘਾਸਨ ਤੇ ਸ਼ੋਭਾਇਮਾਨ ਹੋ ਕੇ ਉਸੇ ਅਧਿਆਤਮਕ ਜੁਗਤ ਨੂੰ ਜਾਰੀ ਰਖਿਆ ਜਿਸ ਦੀ ਨੀਂਹ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਰਖੀ ਸੀ। ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਸਰਬੱਤ ਦੇ ਭਲੇ ਲਈ, ਮਾਨਸ ਜਾਤ ਦੇ ਪ੍ਰਗਾਸ ਲਈ ਮਾਨਵ ਧਰਮ ਦੀ ਰਾਖੀ, ਉੱਚ ਸਾਹਿਤ, ਖੁਸ਼ਹਾਲ ਸਭਿਆਚਾਰ ਅਤੇ ਇਤਿਹਾਸ ਦੇ .ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਅਹਿਜੇ ਸਾਰਥਕ ਤੇ ਸਿਰਜਨਾਤਮਕ ਕਾਰਜ ਕੀਤੇ ਜਿਸਦੀ ਮਿਸਾਲ ਹੋਰ ਕਿਤੇ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੀ।

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਾਮਦਾਸ ਜੀ ਦੇ ਸਮੇਂ ਤਕ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਦਾ ਕਾਫੀ ਪ੍ਰਚਾਰ ਹੋ ਚੁਕਾ ਸੀ। ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਦੇ ਅਸੂਲਾਂ ਤੇ ਸਿਖਿਆ ਦੇ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕਰਕੇ ਲੋਕੀ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਨੂੰ ਅਪਨਾਉਣ ਲਗ ਪਏ ਸੀ। ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬਾਨ ਦੀ ਬਾਣੀ ਦਾ ਨਿਰੰਤਰ ਵਧਦਾ ਪ੍ਰਵਾਹ ਲੋਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪਸਾਰ ਲੈ ਚੁਕਿਆ ਸੀ। ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੇ ਸਮੇਂ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਆਪਣੇ ਵਖਰੇ ਤੇ ਪੂਰੇ ਜਲੌਅ ਵਿੱਚ ਉਭਰ ਕੇ ਸਾਹਮਣੇ ਆਇਆ। ਸੰਨ 1588 ਈਸਵੀ ਵਿੱਚ ਸੱਚਖੰਡ ਸ੍ਰੀ ਹਰਿਮੰਦਰ ਸਾਹਿਬ, ਸ੍ਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਦੀ ਨੀਂਹ ਰਖੀ ਗਈ। ਇਸਦੇ ਮੁਕੰਮਲ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਦਾ ਇਕ ਕੇਂਦਰੀ ਅਸਥਾਨ ਬਣ ਗਿਆ। ਵਡੀ ਗਿਣਤੀ ਵਿੱਚ ਸ਼ਰਧਾਲੂ ਦਰਸ਼ਨਾਂ ਨੂੰ ਆਉਣ ਲਗੇ।

ਹਰਿਮੰਦਰ ਸਾਹਿਬ ਗੁਰੂ-ਜੋਤਿ ਦੀ ਜੀਵਨ ਜਾਚ, ਸੋਚ, ਚਿੰਤਨ ਅਤੇ ਗਿਆਨ-ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਦਾ ਪ੍ਰਤੀਕ ਹੈ। ਇਸਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾ ਅਤੇ ਵਿਲੱਖਣਤਾ ਇਸ ਦੇ ਰੂਪ, ਸਰੂਪ ਦਾ ਹਰ ਰੰਗ ਅਪਣੇ ਆਪ ਵਿੱਚ ਸੰਪੂਰਣ ਹੈ।

ਹਰਿਮੰਦਰ ਮਹਿ ਹਰਿ ਵਸੈ ਸਭ ਨਿਰੰਤਰ ਸੋਇ॥

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਣਜੀਐ ਸੱਚਾ ਸਉਦਾ ਹੋਇ॥

(ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ 3)

ਹਰਿਮੰਦਰ ਸੋਈ ਆਖੀਐ ਜਿੱਥੇ ਹਰਿ ਜਾਤਾ॥

ਮਾਨਸੁ ਦੇਹ ਗੁਰਬਚਨੀ ਪਾਇਆ ਸਭ ਆਤਮ ਰਾਮ ਪਛਾਤਾ॥

(ਰਾਮਕਲੀ ਸ੍ਰੀ ਵਾਰ ਮਹਲਾ 3)

ਹਰਿਮੰਦਰੁ ਹਰਿ ਕਾ ਹਾਟ ਹੈ ਰਖਿਆ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰਿ॥

ਜਿਸ ਵਿਚ ਸਉਦਾ ਇਕੁ ਨਾਮੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲੈਨ ਸਵਾਰ॥

(ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ 3)

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਸੰਨ 1604 ਈਸਵੀ ਵਿੱਚ ਸਰਬ-ਸਾਂਝੀਵਾਲਤਾ ਲਈ ਜਗੋ-ਜੁਗ ਅਟਲ, ਹਲਤ-ਪਲਤ ਕੇ ਰਖਿਅਕ, ਸ਼ਬਦ-ਰੂਪ ਬਾਣੀ ਨੂੰ ਬੜੀ ਕਲਾਤਮਕ ਅਤੇ ਦੂਰਗਾਮੀ ਦ੍ਰਿਸਟੀ ਨਾਲ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦਾ ਸੰਪਾਦਨ ਕਾਰਜ ਸੰਪੂਰਣ ਕਰ ਦਿੱਤਾ। ਇਸਦਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਵੀ ਸੱਚਖੰਡ ਸ੍ਰੀ ਹਰਿਮੰਦਰ ਸਾਹਿਬ ਵਿੱਚ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਵਿੱਚ ਬਿਨਾ ਕਿਸੇ ਵਿਤਕਰੇ ਅਤੇ ਭੇਦ-

ਭਾਵ ਤੋਂ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬਾਨ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਹਿੰਦੂਸਤਾਨ ਦੇ ਹੋਰ ਸੱਚ ਧਰਮ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਸੰਤਾਂ, ਮਹਾਂਪੁਰਸ਼ਾਂ, ਪੀਰਾਂ-ਫਕੀਰਾਂ ਅਤੇ ਦਰਵੇਸ਼ਾਂ ਦੀ ਬਾਣੀ ਸ਼ਾਮਲ ਕੀਤੀ ਗਈ।

ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਆਪ ਇਕ ਮਹਾਨ ਸਾਹਿਤਕਾਰ ਸਨ। ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਵਿੱਚ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧ ਬਾਣੀ ਆਪ ਜੀ ਦੀ ਹੀ ਹੈ।ਆਪ ਜੀ ਨੇ ਅਨੇਕਾਂ ਛੰਦ ਲਾ-ਮਿਸਾਲ ਢੰਗ ਨਾਲ ਨਿਭਾਏ ਹਨ। ਆਪਜੀ ਨੂੰ ਰਸ, ਅਲੰਕਾਰ,ਰਾਗਾਂ ਦੀ ਬੜੀ ਡੂੰਘੀ ਸਮਝ ਸੀ। ਇਸ ਤੋਂ ਬਿਨਾ ਕੇਂਦਰੀ ਪੰਜਾਬੀ, ਮੁਲਤਾਨੀ, ਲਹਿੰਦੀ, ਫਾਰਸੀ ਅਤੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਦਾ ਗਿਆਨ ਆਪਦਾ ਮਹਾਨ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਗਿਆਨੀ ਹੋਣਾ ਦਰਸਾਉਂਦਾ ਹੈ

ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਦੀ ਦਿਨ-ਬ-ਦਿਨ ਵਧ ਰਹੀ ਸ਼ੋਭਾ ਸਮੇਂ ਦੇ ਹਾਕਮ ਜਹਾਂਗੀਰ ਦੇ ਕੰਨਾਂ ਤਕ ਵੀ ਪਹੁੰਚੀ। ਅਪਣੇ ਦਰਬਾਰੀਆਂ ਅਤੇ ਦੀਵਾਨ ਚੰਦੂ ਦੀਆਂ ਗਲਾਂ ਸੁਣ ਕੇ ਜਹਾਂਗੀਰ ਨੇ ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੂੰ ਲਾਹੌਰ ਬੁਲਵਾ ਭੇਜਿਆ। ਚੰਦੂ ਨੇ ਮੌਕਾ ਦੇਖ ਕੇ ਜਹਾਂਗੀਰ ਨੂੰ ਭੜਕਾ ਦਿੱਤਾ ਕਿ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਵਿੱਚ ਇਸਲਾਮ ਵਿਰੁਧ ਗਲਾਂ ਦਰਜ ਹਨ ਅਤੇ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਰਾਜ ਵਿਰੁਧ ਬਗਾਵਤ ਦੀ ਤਿਆਰੀ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਜਹਾਂਗੀਰ ਨੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਨੂੰ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਵਿੱਚ ਹਜ਼ਰਤ ਮੁਹੰਮਦ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਸਿਫਤ ਸਲਾਹ ਸ਼ਾਮਿਲ ਕਰਨ ਲਈ ਕਿਹਾ ਪਰ ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੇ ਸਾਫ ਇਨਕਾਰ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਅਤੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਸ ਗ੍ਰੰਥ ਵਿੱਚ ਪਰਮ ਪਿਤਾ ਪਰਮਾਤਮਾ, ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੀ ਮਹਿਮਾ ਵਰਣਿਤ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ ਨਾ ਕਿ ਕਿਸੇ ਵਿਅਕਤੀ-ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਦੀ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੀ ਦ੍ਰਿੜਤਾ ਅਤੇ ਨਿਰਭੈਤਾ ਦੇਖ ਕੇ ਜਹਾਂਗੀਰ ਨੇ ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੂੰ 2 ਲੱਖ ਰੁਪਏ ਜੁਰਮਾਨਾ ਭਰਨ ਅਤੇ ਸਜ਼ਾ ਭੁਗਤਣ ਲਈ ਕਿਹਾ ਗਿਆ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਸੱਚ ਦੇ ਮਾਰਗ ਤੋਂ ਪਿੱਛੇ ਨਹੀਂ ਹਟੇ ਅਤੇ ਅਪਣੀ ਕੁਰਬਾਨੀ ਦੇਣੀ ਉਚਿਤ ਸਮਝੀ।

ਜਹਾਂਗੀਰ ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੂੰ ਅਪਣੇ ਦੀਵਾਨ ਚੰਦੂ ਲਾਲ ਦੇ ਹਵਾਲੇ ਕਰ ਦਿੱਤਾ। ਹੁਣ ਚੰਦੂ ਦੇ ਹੱਥ ਆਪਣੀ ਨਿਜੀ ਦੁਸ਼ਮਨੀ ਕਢਣ ਦਾ ਮੌਕਾ ਲਗ ਗਿਆ ਕਿਓਂਕਿ ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੀ ਦਿਨ-ਬ-ਦਿਨ ਵਧ ਰਹੀ ਕੀਰਤੀ ਨੂੰ ਵੇਖਦੇ ਹੋਏ ਲਾਹੌਰ ਦੇ ਦੀਵਾਨ ਚੰਦੂ ਲਾਲ ਵਲੋਂ ਭੇਜੇ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਨੇ ਚੰਦੂ ਦੀ ਲੜਕੀ ਦਾ ਰਿਸ਼ਤਾ ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੇ ਸਪੁੱਤਰ ਹਰਿਗੋਬਿੰਦ ਜੀ ਨਾਲ ਪੱਕਾ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਸੀ। ਜਦੋਂ ਚੰਦੂ ਨੂੰ ਇਸ ਗਲ ਦਾ ਪਤਾ ਲਗਾ ਤਾਂ ਉਸਨੂੰ ਬੜੀ ਹੇਠੀ ਲਗੀ, ਅਪਣੇ ਆਪਨੂੰ ਵਡਾ ਜਾਣ ਕੇ ਚੰਦੂ ਨੇ ਗੁਰੂ ਘਰ ਬਾਰੇ ਅਪਸ਼ਬਦ ਕਹਿਣੇ ਅਤੇ ਬੋਲ-ਕੁਬੋਲ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤੇ। ਨਿਮਰਤਾ ਅਤੇ ਪਰਉਪਕਾਰ ਦੇ ਪੁੰਜ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਤਾਂ ਉਸਤਤ-ਨਿੰਦਿਆ ਤੋਂ ਉਪਰ ਤਾਂ ਸਨ ਪਰ ਸਿੱਖ ਸੰਗਤ ਨੂੰ ਹੰਕਾਰੀ ਚੰਦੂ ਦੀ ਗੁਰੂ ਘਰ ਬਾਰੇ ਅਜਿਹੀ ਰਾਇ ਅਤੇ ਨਿੰਦਿਆ ਬੁਰੀ ਲਗੀ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੂੰ ਬੇਨਤੀ ਕੀਤੀ ਕਿ ਗੁਰੂ ਜੀ ਹੰਕਾਰੀ ਚੰਦੂ ਦਾ ਇਹ ਰਿਸ਼ਤਾ ਅਪ੍ਰਵਾਨ ਕਰ ਦੇਣ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਵਲੋਂ ਰਿਸ਼ਤੇ ਦੇ ਇਨਕਾਰੀ ਹੋਣ ਤੇ ਚੰਦੂ ਸੜ-ਬਲ ਗਿਆ ਅਤੇ ਉਹ ਗੁਰੂ ਜੀ ਦਾ ਵੈਰੀ ਬਣ ਗਿਆ ਸੀ।

ਚੰਦੂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਨਿਜੀ ਦੁਸ਼ਮਨੀ ਅਤੇ ਹਾਕਮ ਦੇ ਹੁਕਮਾਂ ਦੀ ਪਾਲਨਾ ਦੀ ਆੜ ਵਿੱਚ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੂੰ ਅਸਹਿ ਤੇ ਅਕਹਿ ਤਸੀਹੇ ਦਿੱਤੇ।ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੂੰ ਅਤਿ ਗਰਮੀ ਵਿੱਚ ਅੱਗ ਨਾਲ ਸੜਦੀ ਲੋਹ ਉਪਰ ਬਿਠਾਇਆ ਗਿਆ। ਕੜਛਿਆਂ ਰਾਹੀਂ ਤੱਤੀ ਰੇਤ ਸਰਿ ਉਪਰ ਧੂੜੀ ਗਈ ਅਤੇ ਦੇਗ ਵਿੱਚ ਉਬਾਲਿਆ ਗਿਆ।

ਸ਼ਾਂਤੀ ਦੇ ਪੁੰਜ ਅਤੇ ਨਿਮਰਤਾ ਤੇ ਪਰਉਕਾਰ ਦੀ ਮੂਰਤ ਅਪਣੇ ਅਸੂਲਾਂ ਤੇ ਟਿਕੇ ਰਹੇ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਧਰਮ ਅਤੇ ਕੌਮ ਨੂੰ ਕਾਇਮ ਰਖਣ .ਖਾਤਰ ਜੇਠ ਸੁਦੀ ਚੌਥ ਵਾਲੇ ਦਿਨ ਜੋਤੀ-ਜੋਤ ਸਮਾ ਗਏ।

ਡਾ. ਚਰਨਜੀਤ ਸਿੰਘ

ਸਾਬਕਾ ਚੀਫ ਮੈਨੇਜਰ (ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ)

श्री गुरू अर्जुन देव जी का जीवन और उपदेश

डॉ. चरनजीत सिंह

श्री गुरू नानक देव जी की पाँचवीं जोत साहिब श्री गुरू अर्जुन देव जी ने श्री गुरू नानक देव जी के आदर्शों के अनुरूप सिख धर्म की नींव पर उच्च विचारों और सिद्धांतों की इमारत खड़ी की और इसकी रक्षा के लिए अपना आप भी कुर्बान कर दिया। श्री गुरू अर्जुन देव जी ने धर्म की नींव को मजबूत बनाने और समाज के बुनियादी सिद्धांतों की ख़ातिर अपनी कुर्बानी देकर सिद्ध कर दिया कि कोई भी धर्म या देश बड़ी इमारतों से बड़ा नहीं बनता बल्कि बड़ी कुर्बानियों की बुनियाद पर ही निर्मित होता है।

श्री गुरू अर्जुन देव जी ने गुरुगद्दी पर विराजमान हो कर गुरू–धर्म, गुरू–शक्ति, गुरू–लहर और गुरू–संस्था को स्थापित और उजागर करने के लिए जो योग्य अगुवाई की और जो योजनाएं बनाईं उन्हें अध्यात्मिक और आदर्शक रूप से साकार किया। उनका सिर्फ ऐतिहासिक गौरव ही नहीं बल्कि अध्यात्मिक जगत में तथा सिख धर्म की विशेषता और विलक्षणता का प्रदर्शन भी हुआ है।

श्री गुरू अर्जुन देव जी चौथे गुरू श्री गुरू रामदास जी के सबसे छोटे सुपुत्र थे। बड़ा भाई पृथी चंद आप जी से ईर्ष्या करता था क्योंकि आप अधिक प्रतिभाशाली व दूरदर्शी थे। आपको पिता से दूर रखने के लिए वो हर समय कोई न कोई योजना बनाता रहता था। एक बार श्री गुरू अर्जुन देव जी ने अपने पिता को लाहौर से चिट्ठियाँ लिखी थीं जिनमें पिता के प्रति प्रेम और मिलने की लालसा के अद्वितीय रस के रंग में डूबे मन के जज़्बात प्रकट किए थे। पृथी चंद ने गुरू अर्जुन देव जी द्वारा भेजी गई तीनों चिट्ठियाँ छिपा लीं। पिता श्री गुरू रामदास जी को जब चिट्ठी पर पड़े अंकों से पहली चिट्ठियों के बारे में पता चला तो उन्होंने दोनों को एक चिट्ठी और लिखने को कहा। गुरु अर्जुन देव जी की लिखी चिट्ठी में पहले की तीनों चिट्ठियों जैसे काव्यात्मक गुण और अलौकिक भावनाएँ थीं।

पहली तीनों चिट्ठियों में जहाँ गुरू पिता को मिलने की तीव्र इच्छा और लालसा का शानदार चित्र देखने को मिलता है, वहीं गुरू अर्जुन देव जी की लिखी चौथी चिट्ठी में पिता मिलाप के बेमिसाल वर्णन सहजता और गुरू पिता के प्रति दर्शन व समर्पण की भावना उजागर होती है:

"भाग होवा गुरू संत मिलाया
प्रभ अबिनासी घर महि पाया
सेव करी पल चसा न विछड़ा
जन नानक दास तुम्हारे जीओ ।। (४)।।
हऊ घोली जीओ घोल घुमाई
जन नानक दास तुम्हारे जीओ"

श्री गुरू अर्जुन देव जी का जीवन सच, सिमरन, सेवा, सहज और गुरु के प्रति समर्पित कमाई वाला था। आप गुरमत ब्रह्म और गुरमत प्रकाश के साथ ओतप्रोत होने के कारण आत्मिक मंडल के रस और आनंद से सरोबार, मिथ्या, वैर–विरोध, लोभ– मोह, अहम–अहंकार की वृत्ति की पकड़ से ऊपर थे। यही कारण है कि श्री गुरू रामदास जी ने अपनी जीवन–शैली और उच्च आत्मिक उड़ान को देखते हुए अपनी जागृत जोत अध्यात्मिक जुगत से आप में टिकाने का निर्णय लिया।

गुरू घर की महिमा में रंगे समकालीन भट्टों ने इस संबंध में गुरू–धर्म, गुरू–शक्ति, गुरू–लहर और गुरू–संस्था का वर्णन निम्न प्रकार से किया है:

- **रामदास गुरू जग तारन कऊ गुरू जोत अर्जुन माहि धरी।।**
- **भन मंथरा कछु भेद नहीं गुरू अर्जुन प्रतख हरि।।**
- **छत्र सिंहासन पृथ्मी गुरू अर्जुन को दे आयो।।**

श्री गुरू अर्जुन देव जी ने गुरू सिंहासन पर शोभायमान होकर उसी अध्यात्मिक जुगत को जारी रखा जिसकी नींव श्री गुरू नानक देव जी ने रखी थी। श्री गुरू अर्जुन देव जी ने सरबत के भले के लिए, मानस–जाति के उत्थान के लिए, मानव धर्म की रक्षा के

लिए, उच्च साहित्य, खुशहाल जीवन दर्शन और इतिहास के क्षेत्र में ऐसे सार्थक और सृजनात्मक कार्य किए जिसकी मिसाल और कहीं नहीं मिलती।

श्री गुरू रामदास जी के समय तक सिख धर्म का काफी प्रचार हो चुका था। सिख धर्म के उसूलों और उपदेशों के प्रचार करके लोग सिख धर्म के अनुयायी बन चुके थे। गुरू साहिब की बानी का निरंतर बढ़ता प्रभाव जन–साधारण में पसार पा चुका था। श्री गुरू अर्जुन देव जी के समय सिख धर्म अपने पूरे यौवन पर उभर कर सामने आया। सन् 1588 ईस्वी में सचखंड श्री हरिमंदिर साहिब श्री अमृतसर की नींव रखी गई। इसके स्थापन से सिख धर्म का एक केन्द्रीय स्थान बन गया। बड़ी गिनती में श्रद्धालु दर्शनों हेतु आने लगे।

हरिमंदिर साहिब गुरू जोत की जीवन–पद्धति, सोच, चिंतन और ज्ञान–प्रकाश का प्रतीक है। इसकी विशेषता और विलक्षणता इसके रूप, स्वरूप का हर रंग अपने आप में संपूर्ण है।

हरिमंदिर में हरि वसै सब निरंतर सोई
नानक गुरमुख वणजिए सच्चा सौदा होई।।

(प्रभाती महला 3)

हरिमंदिर सोई आखीए जिथे हर जाता
मानस देह गुरबचनी पाया सब आत्म राम पछाता।।

(रामकली सिरी वार महला 3)

हरिमंदिर हरि का हाट है रखिया सूद सवारि
दिल विच सौदा इक नाम गुरमुख लैन सवार।।

(प्रभाती महला 3)

श्री गुरू अर्जुन देव जी ने सन् 1604 ईस्वी में सरब सांझीवालता के लिए जुगो–जुग अटल , दीन–दुनिया के रक्षक, शब्द–रूपी बानी को बड़ी कलात्मक और दूरगामी दृष्टि से श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी का संपादन कार्य सम्पन्न कर दिया। इसका प्रकाश भी सचखंड श्री हरिमंदिर साहिब में कर दिया गया। इस ग्रंथ में बिना किसी भेद–भाव के गुरू साहिबान के इलावा हिंदुस्तान के और सच व धर्म से जुड़े संतों, महापुरुषों, पीरों –फकीरों और दरवेशों की बानी शामिल की गई।

श्री गुरू अर्जुन देव जी स्वयं एक महान साहित्यकार थे। श्री गुरू ग्रंथ साहिब में आप द्वारा रचित बाणी सबसे अधिक है। आप जी ने अनेकों छंद बेमिसाल ढंग से निभाए हैं। आप जी को रस, अलंकार व रागों की गहरी समझ थी। इसके अतिरिक्त केंद्रीय पंजाबी, मुल्तानी, लहिंदी, फ़ारसी और संस्कृत का ज्ञान – आपको महान भाषा विज्ञानी होता दर्शाता है।

सिख धर्म की दिन–ब–दिन बढ़ रही शोभा समय के हुक्मरान जहाँगीर के कानों तक भी पहुँची। अपने दरबारियों और दीवान चंदू की बातें सुनकर जहाँगीर ने गुरू जी को लाहौर बुलवा भेजा। चंदू ने मौका देख कर जहाँगीर को भड़का दिया कि गुरु ग्रंथ साहिब में इस्लाम के विरुद्ध बातें दर्ज हैं और गुरू अर्जुन देव हकूमत के ख़िलाफ बगावत की तैयारी कर रहे हैं। जहाँगीर ने गुरू अर्जुन देव जी को श्री गुरू ग्रंथ साहिब में हज़रत मुहम्मद साहिब की प्रशंसा लिखने को कहा पर गुरू जी ने साफ़ इंकार कर दिया और कहा कि इस ग्रंथ में मात्र एक परमात्मा की महिमा की गई है न कि किसी व्यक्ति विशेष की। गुरू जी की दृढ़ता और निर्भयता को देख कर गुरू जी पर दो लाख रुपए जुर्माना भरने और सज़ा भुगतने के लिए तैयार रहने को कहा। गुरू जी सच के मार्ग से विचलित न हुए और अपनी कुर्बानी देनी उचित समझी।

जहाँगीर ने गुरू जी को अपने दीवान चंदू के हवाले कर दिया। अब चंदू के हाथ अपनी निजी दुश्मनी निकालने का मौक़ा हाथ लग गया क्योंकि गुरू जी की दिन–ब–दिन बढ़ती कीर्ति को देखते हुए लाहौर के दीवान चंदू लाल की तरफ से भेजे ब्राह्मण ने चंदू की लड़की की रिश्ता गुरू जी के सुपुत्र हरिगोबिंद जी के साथ पक्का कर दिया था। जब चंदू को इस बात का पता चला तो उसे बहुत बेइज़्ज़ती लगी, अपने आपको बड़ा जान कर चंदू ने गुरू घर के बारे में अपशब्द कहने और बुरा–बला कहने में कोई कसर न छोड़ी। नम्रता और परोपकार की मूरत श्री गुरू अर्जुन देव जी तो स्तुति और निंदा से ऊपर थे पर सिख संगत को अहंकारी चंदू की गुरू –घर के बारे में उसकी की गई निंदा बुरी लगी और उन्होंने गुरू जी से निवेदन किया कि वे अहंकारी चंदू का यह रिश्ता तोड़ दें। गुरू जी की ओर से रिश्ते के इंकार होने पर चंदू जल–भुन गया और गुरू जी का दुश्मन बन गया था।

चंदू ने अपनी निजी दुश्मनी और हाकिम के हुक्मों की पालना की आड़ में गुरू अर्जुन देव जी को असहनीय कष्ट देने का निर्णय कर लिया। अति भीष्ण गर्मी में आग से तपे तवे पर गुरू जी को बिठाया गया। उनके सिर पर गरम रेत डाली गई और देग में उबाला गया।

शांति के मसीहा , नम्रता और परोपकार की मूरत गुरू जी अपने उसूलों पर कायम रहे। गुरू जी धर्म को कायम रखने की ख़ातिर प्रभु –चरणों में जा बिराजे।।

सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

डॉ. नीरू पाठक

प्यारा साडा बैंक – पौधा सदाबहार

किसी भी संस्था के लिए उसका इतिहास एवं संस्कृति उसके स्वयं के लिए एक अनमोल एवं अक्षुण्ण संपत्ति होती है किंतु कामयाबी एवं लोकप्रियता के पीछे किन विशिष्ट व्यक्तियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा, किन परिस्थितियों में संस्था की नींव डाली गई तथा उसके पश्चात एक छोटे पौधे से विशाल वृक्ष बनने की यात्रा में आयीं चुनौतियों एवं समय के साथ आए उतार–चढ़ाव को जानना भी अत्यंत आवश्यक है। यदि हम 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तथा 19वीं शताब्दी के प्रारंभ के समय का अध्ययन करें तो पाएंगे कि अंग्रेजी शासन से त्रस्त संपूर्ण भारतवर्ष जोकि कभी सोने की चिड़िया कहलाता था, आर्थिक क्षेत्र के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी अत्यंत पिछड़ गया था।

आज का समृद्धशाली पंजाब भी इन विसंगतियों से अछूता नहीं था। सिख कौम धर्म और शिक्षा दोनों ही क्षेत्रों में पिछड़ गई थी। कौम में जागरण की आवश्यकता थी। इसलिए वर्ष 1901 मे बैसाखी के दिन अमृतसर के कुछ बहुप्रतिष्ठित बुद्धिजीवियों ने एकजुट होकर 22 सदस्यों की एक सब कमेटी बनाई। इस कमेटी का प्रमुख कार्य जत्थेबंदी की रूपरेखा तैयार करना था। केंद्रीय जत्थेबंदी के गठन का कार्य एक सब–कमेटी को सौंपा गया, जिसका नाम चीफ खालसा दीवान प्रबंधक कमेटी रखा गया। चीफ खालसा दीवान प्रबंधक कमेटी का प्रथम समागम 30 अक्तूबर 1902 को दिवाली वाले दिन अमृतसर में हुआ। जुलाई 1904 में यह संस्था चीफ खालसा दीवान के नाम से पंजीकृत हुई तथा सर्वप्रथम बौद्धिक क्षेत्र में विकास को ध्यान में रखते हुए खालसा कॉलेज की स्थापना की गई किंतु केवल कॉलेज की स्थापना ही पर्याप्त नहीं थी, उसको गति देना भी आवश्यक था। 1907 में सिंध प्रांत में खालसा यतीमखाना भी बनाया गया। ऐसे समय में कॉलेज तथा अन्य समाजिक संस्थानों को आर्थिक संकट से उबारने के लिए सर सुंदर सिंह जी मजीठिया की अगुवाई में कॉलेज की मैनेजिंग कमेटी एकजुट हो, प्रयासरत हो गई तथा इसके साथ ही धार्मिक प्रवृत्ति वाले विद्वान, महान चिंतक, लेखक तथा समाज–सुधारक यथा भाई जोधा सिंह, प्रोफेसर तेजा सिंह, प्रोफेसर हरकिशन सिंह ने भी अध्यापन कार्य प्रारंभ कर

दिया। सन् 1904 में बैसाखी वाले दिन कॉलेज की नई इमारत का शिलान्यास पंजाब के लेफ्टीनेंट गवर्नर सर चार्ल्स ने मिंटगुमरी में किया। जिसमें न केवल पंजाब के राजा–महाराजाओं और समाज के प्रतिष्ठित वर्ग ने बल्कि सिख फौजियों, किसानों ने भी अपना पूर्ण सहयोग तथा योगदान दिया। जब शिक्षा में धर्म भी जुड़ जाता है, तो उसकी सफलता को कोई रोक नहीं सकता। खालसा कॉलेज की सफलता और विस्तार लगातार बढ़ने लगा और पंजाब की हदों को पार कर, सिंध तक पहुँच गया। सन् 1906 में इस कार्य को गति देने का जिम्मा चीफ खालसा

दीवान ने अपने ऊपर लिया तथा सिंध ब्लूचिस्तान प्रचारक सब–कमेटी बनाई गई, जिसमें 11 सदस्य थे। सभी सदस्य अलग–अलग स्थानों पर जाकर लोगों में धर्म तथा शिक्षा के महत्व को बताकर उन्हें जागृत करने का प्रयास करते थे। इसका असर भी हुआ, लोगों में नए उत्साह का संचार हुआ। इसे देखते हुए वर्ष 1907 में कराची में हो रही मुस्लिम एजुकेशन कांफ्रेस में प्रचार समिति की ओर से एक जत्था भी भेजा गया। कॉन्फ्रेंस से प्रभावित होकर सर सुंदर सिंह

मजीठिया (बैंक निदेशक) ने अमृतसर में अपने घर पर ही जनवरी 1908 में जाने माने नेताओं की मीटिंग बुलाई जिसकी अध्यक्षता सरदार तरलोचन सिंह जी (बैंक के पहले मैनेजिंग डायरेक्टर) ने की , और इस प्रकार सर्वसम्मति से सिख एजुकेशन कॉन्फ्रेंस की स्थापना करने का दृढ़ संकल्प लिया गया तथा मात्र तीन माह के पश्चात पंजाब के प्रसिद्ध शहर गुजरांवाला में पहली सिख एजुकेशन कॉन्फ्रेंस का सफल आयोजन किया गया।

कॉन्फ्रेंस की सफलता को देखते हुए इस कार्य को निरंतर जारी रखने के लिए सिख एजुकेशन कमेटी की स्थापना की गई। इस सफलता के पश्चात नेताओं ने चिंतन किया कि शिक्षा के पश्चात अब आर्थिक क्षेत्र में पंजाब की सिख कौम की उन्नति के लिए कार्य किया जाए। आर्थिक पिछड़ेपन को समाप्त करने के लिए आवश्यक था कि व्यापार तथा खेती–बाड़ी में तरक्की की जाए जिसके लिए गरीबों के हितों को ध्यान में रखकर कुछ नवीन योजनाएं बनाने की तथा उन पर पूरी ईमानदारी से कार्य करने की आवश्यकता भी महसूस हुई। इन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए "अपना कोई बैंक हो" के पवित्र विचार को मूर्त रूप देते हुए ही दि पंजाब एंड सिंध बैंक लिमिटेड नाम से बैंक की स्थापना की गई।

24 जून 1908 को पवित्र नगरी अमृतसर में गुरु महाराज का छत्र–छाया में इस बैंक का शुभारंभ किया गया। बैंक को चलाने के लिए सरदार तरलोचन सिंह जी को पहला मैनेजिंग डायरेक्टर नियुक्त किया गया। आधुनिक पंजाबी साहित्य के पितामह भाई वीर सिंह जी, सर सुंदर सिंह जी मजीठिया व सरदार त्रिलोचन सिंह जी ने बैंक को चलाने की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली। इन तीनों मित्रों ने अपनी मेहनत लगन और मन वचन और कर्म से बैंक को प्रगति के पथ को अग्रसर किया और आशातीत सफलता प्राप्त की।

उस समय के समाचार पत्र खालसा समाचार अमृतसर ने बैंक के उद्घाटन के समाचार को पत्र में विशेष स्थान दिया था, जिसका हिंदी अनुवाद इस प्रकार है–

"आज दिनांक 24 जून 1908, बुधवार को सिख समुदाय ने व्यापार तथा उद्योग के क्षेत्र में ऐतिहासिक कदम उठाया है आप पूछेंगे यह क्या है? इसका सीधा–सा जवाब है कि व्यापारियों, कारीगरों और किसानों की जरूरतों को पूरा करने हेतु एक खजाना घर खुला गया है। एक बैंक खोला गया है जिसमें अमीरों के घरों से धन पानी की तरह बहेगा और फिर यह राशि नहर, सहायक नदियों, धाराओं तथा नालों की तरह जरूरतमंद व्यापारियों, कारीगरों तथा किसानों के घरों तक पहुंचेगी। यदि सिक्खों ने अपने आर्थिक कल्याण के लिए इस अवसर का ईमानदारी पूर्वक उपयोग किया तो यह उनके आर्थिक पिछड़ेपन को अवश्य ही दूर करेगा और इससे गरीब तबके के लोग आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो जाएंगे। आप पूछेंगे कैसे ? तो हम आपको बताएंगे कि आज प्रातः 8:00 बजे "दि पंजाब एण्ड सिंध बैंक लिमिटेड" का उद्घाटन हुआ है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का अखंड पाठ संपूर्ण हुआ। भाई सोहन सिंह जी ने अरदास की और फिर उन्होंने यहां एकत्रित लोगों को विस्तारपूर्वक बैंक के लाभ बताए। इसके बाद बैंक का कार्य शुरू हुआ। भाई सोहन सिंह जी ने कहा कि बैंक की स्थापना का मूल उद्देश्य उन लोगों, खासकर कारीगरों व्यापारियों तथा किसानों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाना है, जिसके लिए उन्हें कम ब्याज पर धन उपलब्ध कराया जाएगा। इस प्रकार सरकारी तौर पर 24 जून 1908 को बैंक का उद्घाटन हुआ और इसे जनता के लिए समर्पित किया।"

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग

क्षेत्रीय महाप्रबंधक कार्यालय चंडीगढ़ में स्थापना दिवस समारोह 2021

राजभाषा गतिविधियाँ

अंचल कार्यालय फरीदकोट के तत्वावधान में नराकास फरीदकोट की छमाही बैठक

बैंक के तत्वावधान में आयोजित नराकास मोगा की छमाही बैठक

अंचल कार्यालय जयपुर में विशेष संगोष्ठी

राजभाषा कार्यान्वयन को गति प्रदान करने के लिए अंचल कार्यालय पटियाला में प्रतियोगिता का आयोजन किया गया

रचनाकारों से निवेदन

बैंक के प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित की जा रही हिंदी गृह–पत्रिका ''राजभाषा अंकुर'' में प्रकाशन हेतु रचना भेजते समय कृपया अपना फोटो तथा रचना के अंत में अपना नाम, शाखा/कार्यालय का पूरा पता, मोबाइल नंबर तथा अपने बैंक का खाता संख्या (14 अंकों का) भी अवश्य लिखें। बैंक से सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्य रचना भेजते समय उपरोक्त के अतिरिक्त अपने घर का पता तथा अपना पैन नं. (PAN No.) भी अवश्य भेजें।

मुख्य संपादक

दिनांक 16.06.2021 को आयोजित प्रधान कार्यालय स्तरीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक

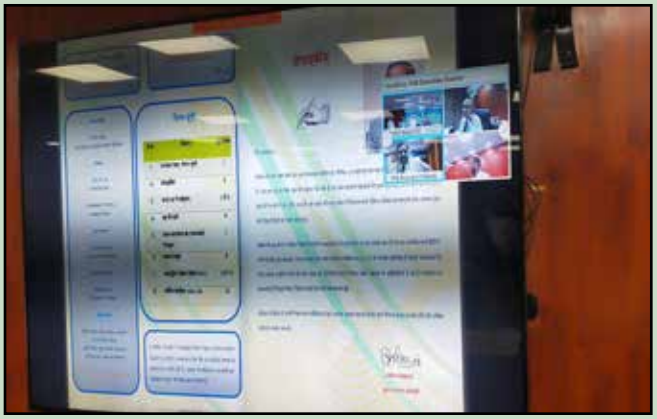

वर्षों से आपका विश्वास
हमारी सफलता का है आधार

मनायें

114वां

स्थापना दिवस

जून 24, 2021

(1908-2021)

हम आपके रिश्तों को प्रमुखता देते हैं

सभी ग्राहकों, संरक्षको, हितधारकों और
शुभचिंतकों को उनके निरंतर संरक्षण के लिये

आभार

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)

जहाँ सेवा ही जीवन-ध्येय है

प्रधान कार्यालयः 21, राजेंद्र प्लेस, नई दिल्ली–110008
वेबसाइट: www.psbindia.com

Head Office: 21, Rajendra Place, New Delhi-110008
Website: www.psbindia.com

1800 419 8300 (Toll Free)

Follow us @PSBIndOfficial